हिमाचल पाठमाला

चौथी कक्षा के लिए

रिकार्ड प्रति

मूल्य
एक रुपया
पच्चीस पैसे

बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन, हिमाचल प्रदेश के पत्र संख्या
HB (3)-Curr/33 D/79-4858-84 दिनांक 5 नवम्बर 1979
द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक

हिमाचल पाठमाला

[चौथी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए]

लेखक व सम्पादक

सन्तराम वत्स्य

प्रकाशक

राजपाल एण्ड सन्ज़,

कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन, हिमाचल प्रदेश द्वारा
रियायती मूल्य पर दिए कागज़ पर प्रकाशित

दूसरा संस्करण, फरवरी 1981
मुद्रक : शिक्षा भारती प्रेस, शाहदरा दिल्ली-110032

विषय-सूची

1. प्रार्थना (कविता)	1
2. कोलतार का पुतला	3
3. क्या कौए गिन सकते हैं	7
4. सड़क से सीख (कविता)	10
5. जैसा कहोगे, वैसा सुनोगे	12
6. सेवा के सौ काम	15
7. फूल और काँटा (कविता)	19
8. एकलव्य की गुरु-दक्षिणा	21
9. किन्नौर : जहाँ नाचते-गाते लोग	25
10. बादल (कविता)	28
11. हिंसा की हार	30
12. शिव और पार्वती का ब्याह	33
13. पथ का गीत (कविता)	36
14. रामायण की कहानी	38
15. पवित्र झील रेणुका	42
16. गधे की दौड़ (कविता)	45
17. हिमाचल का वीर बालक : धर्मसिंह	48
18. अच्छा स्वास्थ्य	51
19. दिवाली (कविता)	54
20. चिड़ियाघर की सैर	56
21. सुन्दर शाल : हिमाचल के	61
22. गौरव गान (कविता)	64
23. कठिन शब्दों के अर्थ	66

1. प्रार्थना

लोट रहा सागर चरणों पर,
सिर पर मुकुट हिमालय ।
जन्मभूमि हम सबको प्यारी,
भारत माता की जय ।

सोने का है यहां सवेरा,
चांदी की हैं रातें ।
खेतों पर फैलाती मखमल,
मोती की बरसातें ।

मोर, पपीहा, कोयल गाते—
इसके मीठे गाने ।
नीले, लाल, सफेद फूल हैं
लगते हमें लुभाने ।

पानी साफ भरा नदियों में,
खेत हरे हैं सारे ।
इसके मीठे फल, मेवे सब,
पशु-पक्षी हैं प्यारे ।

खेले, बढ़े गोद में इसकी,
इसका सब कुछ भाता ।
कभी न भूलें सुख-दुख में हम,
अपनी भारत माता ।

अभ्यास

बताओ : 1. 'भारत माता' से तुम क्या समझते हो ? बताओ।

2. 'सागर चरणों में लोट रहा है और सिर पर हिमालय का मुकुट है'—इसको स्पष्ट करके बताओ।

3. भारत की पांच नदियों, पांच पक्षियों और पांच फूलों के नाम बताओ।

करो : 1. तुम्हारे विद्यालय में भारत का नक्शा है। उसमें हिमालय प्रदेश ढूंढ़ो।

2. अपने विद्यालय की प्रार्थना याद करो।

लिखो : 1. तुम्हें अपना देश क्यों प्यारा है ?—पांच वाक्यों में लिखो।

2. किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु के नाम को संज्ञा कहते हैं। 'राम', 'हिमालय', 'चांदी'—ये संज्ञाएं हैं। ऐसी छह संज्ञाएं पाठ में से छांटो।

2. कोलतार का पुतला

वह थी लोमड़ी रानी। उसने लगाया बाग। बाग में बोये गाजर और शलगम। लोमड़ी रानी रोज सवेरे अपने बाग में जाती। वह जी भर कर शलगम और गाजर खाती। एक दिन सवेरे उसने देखा, कोई उसके बाग के गाजर और शलगम खा गया है।

उसने सोचा, 'मेरे बाग में कौन चोरी करता है ? मैं उसका पता लगाकर ही रहूंगी। उसे चोरी करने की सजा दूंगी।' वह बाग में छिपकर बैठ गई। कुछ देर बाद सफेद पूंछवाला एक खरगोश आया। उसने लाल-लाल पांच गाजरें खाईं। वह गाजरें खाकर भाग गया।

लोमड़ी ने सोचा, 'यह खरगोश मेरी गाजरें खा जाता है। चोर कहीं का। पर मैं भी लोमड़ी हूं। ऐसा फँसाऊंगी कि याद करेगा।'

लोमड़ी ने एक छोटा-सा पुतला बनाया। फिर उस पुतले पर खूब कोलतार पोत दिया। वह पुतले को लेकर अपने बाग में गई। एक पक्का कीला गाड़कर उसमें पुतला बांध दिया। इस काले पुतले को देखकर वह मुस्कराई। फिर वह बाड़ में छिपकर बैठ गई।

सफेद पूंछवाला खरगोश इधर-उधर देखता हुआ खेत में घुस आया। उसने पुतला देखा। उसने सोचा—यह भी गाजर खाने आया होगा। चलकर इससे दो बातें ही कर लूँ।

वह उछलता-कूदता पुतले के पास गया और बोला, "नमस्ते।" पर पुतले ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"तुम चुप क्यों हो ? बोलते क्यों नहीं ?" खरगोश ने पूछा। पुतला फिर भी चुप।

"मैं तुमसे बातें करना चाहता हूँ, पर तुम तो कुछ बोलते ही नहीं हो," खरगोश ने गुस्से में आकर कहा। पुतला फिर भी चुप।

"अब तो मैं तुम्हें मारूँगा," और पुतले को उसने जोर से एक चपत मारी।

उसका हाथ कोलतार से चिपक गया। उसने छुड़ाने का बहुत प्रयत्न किया पर हाथ नहीं छूटा।

उधर बाड़ में छिपी लोमड़ी यह सब देख रही थी। वह मन ही मन खुश हो रही थी।

"अरे भई, मुझे छोड़ भी दो," खरगोश चिल्लाया, "नहीं तो मैं तुम्हें एक तमाचा और मारूँगा।" पुतले ने फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया।

खरगोश ने गुस्से में आकर दूसरे हाथ से उसे जोर का तमाचा मारा। उसका दूसरा हाथ भी कोलतार से चिपक गया। लोमड़ी छिपकर देखती रही और हँसती रही।

"मैं कह रहा हूँ, मुझे छोड़ दो, नहीं तो अब ऐसी जोर की लात मारूँगा कि याद करोगे," खरगोश ने कड़क कर कहा। पुतला फिर भी चुप।

खरगोश ने उसे ज़ोर की लात मारी। उसकी टाँग भी कोलतार में फँस कर रह गई।

उसने टाँग छुड़ाने की बहुत कोशिश की, पर टाँग और भी चिपकती चली गई।

"अपना भला चाहते हो तो अब भी मुझे छोड़ दो। मैं तुम्हें बार-बार कह रहा हूँ कि मुझे छोड़ दो," खरगोश फिर चिल्लाया, "नहीं तो मैं तुम्हें दूसरी लात मारूँगा।" लेकिन कोलतार के पुतले ने न तो उत्तर दिया और न उसे छोड़ा।

लोमड़ी छिपी-छिपी देखती रही और हँसती रही।

खरगोश ने पुतले को जोर से दूसरी लात मारी और वह भी चिपक गई।

"मैं अब भी कहता हूँ कि मुझे छोड़ दो। नहीं तो मैं तुम्हारे पेट में ऐसी जोर की टक्कर मारूँगा कि पता लग जाएगा," खरगोश ने गुस्से और घबराहट के साथ चीखकर कहा।

पुतले ने न उत्तर दिया और न छोड़ा। लोमड़ी देख-देखकर हँसती रही।

खरगोश ने पुतले के पेट में जोर की टक्कर मारी। अब उसका सिर भी चिपक गया।

लोमड़ी ने देखा कि अब खरगोश अच्छी तरह से फँस गया है। वह बाड़ से बाहर निकलकर कहने लगी, "खरगोश मियाँ, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" और वह जोर-जोर से हँसने लगी।

"लोमड़ी रानी, मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। अब मैं कभी भी तुम्हारे बाग में नहीं आऊँगा," खरगोश ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

लोमड़ी मुस्करायी। कहने लगी, "खरगोश मियाँ, तुम चोरी-चोरी मेरी गाजरें खा जाते हो। इस काले पुतले ने तुम्हें अच्छा पकड़ा है। तुम्हें चोरी का फल मिल रहा है। अब भी अगर तुम चोरी न करने की प्रतिज्ञा कर लो तो मैं तुम्हें छुड़ा सकती हूँ।"

खरगोश ने लोमड़ी की बात मान ली और बाद में फिर कभी उसने चोरी नहीं की।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. लोमड़ी ने चोर का पता कैसे लगाया ?

2. लोमड़ी ने चोर को पकड़ने के लिए क्या उपाय किया ?

3. चोर कैसे पकड़ा गया ?

4. खरगोश की जान कैसे बची ?

करो : 1. नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करो :

(क) मेरे काम में कौन.........करता है।

(ख) उसका हाथ.........से चिपक गया।

(ग) खरगोश ने उसे जोर की.........मारी।

2. नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो :

चोरी, सजा, बाड़, तमाचा, प्रतिज्ञा।

लिखो . 1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर विषय-सूची देखकर लिखो :

(क) विषय-सूची देखकर लिखो कि इस पुस्तक में कितने पाठ हैं ?

(ख) पाँचवाँ पाठ कौन से पृष्ठ पर है ?

(ग) नाटक कौन से पृष्ठ पर आरम्भ होता है ?

(घ) इस पुस्तक में कितनी कविताएं हैं ?

3. क्या कौए गिन सकते हैं ?

कहावत है कि पक्षियों में कौआ सबसे चालाक होता है। कौओं का दिमाग बहुत से पक्षियों से ज्यादा तेज है। कौओं की चालाकी और सूझ-बूझ की बहुत-सी कहानियाँ हैं।

एक गहरे बर्तन में नीचे थोड़ा-सा पानी था। प्यासा कौआ बर्तन के मुँह पर बैठा, पानी पीने के लिए चोंच झुकाता था किन्तु चोंच पानी तक नहीं पहुँचती थी। कौए ने देखा, उस बर्तन के पास छोटे-छोटे कंकड़ों का ढेर है। तब उसे एक बात सूझी। उसने एक-एक करके छोटे-छोटे कंकड़ चोंच से उठाकर बर्तन में डालने शुरू किए। उससे पानी ऊपर उठ आया। इस तरह कौए की चोंच आसानी से पानी तक पहुँचने लगी और उसने अपनी प्यास बुझाई।

कौआ रोटी के सूखे टुकड़े को आसानी से जब तोड़कर खा नहीं सकता, तब वह उसे पानी में भिगोता है और नरम हो जाने पर खाता है।

कौओं की सूझ-बूझ की एक रोचक घटना का वर्णन इस प्रकार है :

एक शिकारी कौओं पर गोली चलाने के लिए अपना निशाना सीधा करने लगा। कौओं पर गोली चलाते उसे तीन-चार दिन हो गए थे। अब कौए उसे देखते ही उड़कर भाग जाते। एक दिन शिकारी उस कूड़े के ढेर के पास जा छिपा, जहाँ कौए प्रायः चुगते थे। पर कौओं ने उसे देख लिया और उड़ गए। कौए तभी उस कूड़े के ढेर पर आए, जब उन्होंने शिकारी को वहाँ से जाते

हुए देख लिया ।

दूसरे दिन शिकारी कौओं को धोखा देने के लिए अपने एक मित्र को साथ लेकर फिर वहाँ जा छिपा । थोड़ी देर बाद शिकारी ने मित्र को वापस भेज दिया । किन्तु कौए तब तक कूड़े के ढेर पर लौटकर नहीं आए, जब तक शिकारी वहाँ से निकल कर वापस नहीं चला गया ।

तीसरे दिन शिकारी कौओं को ठगने के लिए अपने साथ दो मित्रों को ले गया । तीनों थोड़ी देर छिपकर बैठे रहे । फिर उसने दोनों मित्रों को वापस भेज दिया । वह स्वयं वहीं छिपकर बैठा, कौओं के कूड़े के ढेर पर उतरने की प्रतीक्षा करने लगा । पर कौए नहीं आए, नहीं आए ।

अब तो शिकारी खीझ उठा । उसने सोचा, मैं भी हार नहीं मानूंगा । चौथे दिन वह तीन मित्रों को लेकर जा छिपा । थोड़ी देर के बाद तीनों मित्रों को उसने वापस भेज दिया । इस बार कौए धोखा खा गए । वे कूड़े के ढेर पर उतर आए ।

शिकारी का कहना है : "मैं इस प्रयोग से इस परिणाम पर पहुँचा कि कौए केवल तीन तक गिन सकते हैं ।"

जब तीन लोग एक साथ चले गए तो कौओं ने समझ लिया कि जितने लोग यहाँ आए थे, वापस चले गए ।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. सबसे चालाक पक्षी कौन-सा है ?
2. गहरे बर्तन में से कौए ने पानी कैसे पिया ?
3. कौआ सूखी रोटी को कैसे खाता है ?

4. कौए शिकारी को देखते ही क्यों उड़ जाते थे ?
5. क्या कौए गिनना जानते हैं ? इस पाठ के ग्राधार पर बताग्रो।

करो : 1. ग्रपने पास-पड़ोस के किसी पक्षी की आदतों का अध्ययन करो।
2. नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो :
शिकारी, निशाना, प्राय:, धोखा, प्रयोग, परिणाम।

लिखो : 1. गहरे बर्तन में से कौए ने पानी कैसे पिया, इस कहानी को ग्रपने शब्दों में लिखो।

4. सड़क से सीख

सड़क, कहाँ से आती है तू,
और कहाँ को जाती है तू ?
कितना लम्बा है तेरा तन,
देखे हैं कितने पर्वत - वन ?
कितने देखे नगर निराले,
पार किये कितने नद-नाले ?
कितने तुझ पर लड़के खेले,
देखे तूने कितने मेले ?
क्या इसकी हो सकती गिनती,
हो सकती, तो है यह विनती—
कुछ हमको भी बतला प्यारी,
कहाँ बसे कैसे नर-नारी ?
कौन-कौन राजे - महाराजे
तुझ पर चले बजा कर बाजे ?
कितने तुझ पर फिरे भिखारी
भूखे, प्यासे, बिना सवारी ?
सारी पृथ्वी है तेरा घर
फिर भी कभी न पाती आदर ?
पैरों की ठोकर खाती है,
फिर भी तू कूटी जाती है ।

इससे सोचा मैंने मन मे
दब्बू बन कर के जीवन में,
बहुत कठिन है आदर पाना
क्या यह भेद न तूने जाना ?
सीख लिया जिसनें चुप रहना
उसको ही पड़ता सब सहना ।
सड़क रहेगी सदा पड़ी क्या ?
हो सकती तू नहीं खड़ी क्या ?

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. कवि सड़क से क्या विनती करता है ?

2. "कितना लम्बा है तेरा तन, देखे कितने हैं पर्वत-वन ?"
इसका क्या अभिप्राय है ?

3. सड़क का अपमान किस प्रकार होता है ?

लिखो : 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग करो :
पर्वत, नर-नारी, नद, पृथ्वी ।

2. सड़क से हमें क्या लाभ होते हैं ?

3. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट करके लिखो :
"सड़क रहेगी सदा पड़ी क्या ? हो सकती तू नहीं खड़ी क्या ?"

4. जिस संज्ञा से एक वस्तु का नाम लेने से वैसी अनेक वस्तुओं का ज्ञान हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—सड़क, पर्वत आदि। इस पाठ में से आठ जातिवाचक संज्ञा शब्द ढूंढ़ें ।

5. इस कविता को पढ़ते समय अल्पविराम (,) के चिह्न पर जरा रुकें ।

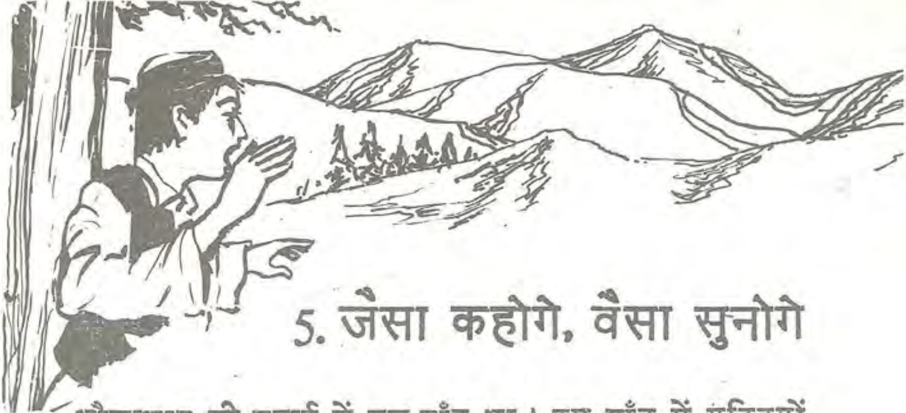

5. जैसा कहोगे, वैसा सुनोगे

धौलाधार की तराई में एक गाँव था। इस गाँव में गद्दियों के बहुत से घर थे। इस गाँव में 'जोगी' नाम का एक गड़रिया रहता था। उसका एक लड़का था, सूरज। सूरज माता-पिता का अकेला बेटा था। वे उसे बहुत प्यार करते थे।

सूरज बड़ा होकर बिगड़ने लगा। वह बड़ा जिद्दी था। उसके साथी उसकी बात नहीं मानते तो गालियां बकने लगता। छोटे-बड़े का भी विचार नहीं करता। माता-पिता सोचते, बड़ा होकर सुधर जाएगा। पर वह ज्यों-ज्यों बड़ा होता गया, बिगड़ता गया। गाली के बगैर बात ही नहीं करता। दो-चार बार उसकी पिटाई भी हुई, पर उसकी आदत नहीं छूटी।

एक दिन उसके पिता को बुखार हो गया। उसने सूरज को बुलाकर कहा कि आज तुम्हीं भेड़-बकरियाँ चरा लाओ।

सूरज भेड़-बकरियाँ निकालकर जंगल की ओर चला। एक जगह भेड़-बकरियाँ चरने लगीं तो सूरज एक ऊँचे पत्थर पर जा बैठा। उसने अपनी बाँसुरी निकाली और बजाने लगा। वह बाँसुरी अच्छी बजा लेता था।

पर यह क्या ? यह दूसरा कौन है जो बिल्कुल उसकी नकल करता हुआ बाँसुरी बजा रहा है। जैसी तान सूरज निकाल रहा था, दूसरी तान भी एकदम वैसी ही थी। जरा भी तो फर्क नहीं था। सूरज को यह बात अच्छी नहीं लगी।

सूरज जोर से चिल्लाया, "कौन मेरी नकल उतार रहा है ?"

दूसरी श्रावाज श्राई, "कौन मेरी नकल उतार रहा है ?"

श्रब तो सूरज को क्रोध श्रा गया। वह श्रौर भी चिल्लाकर बोला, "चुप होता है या नहीं ?"

वैसी ही चिल्लाने की श्रावाज श्राई, "चुप होता है या नहीं ?"

श्रब तो सूरज श्रापे से बाहर हो गया। चिल्लाकर बोला, "यह कौन उल्लू है जो मेरी नकल उतार रहा है ?"

उत्तर मिला, "यह कौन उल्लू है जो मेरी नकल उतार रहा है ?"

मारे क्रोध के सूरज की श्राँखें लाल हो गईं। होंठ फड़-फड़ाने लगे। वह गन्दी गालियाँ बकने लगा।

उधर से उत्तर में वैसी ही गन्दी गालियाँ सुनने को मिलीं।

सूरज गालियाँ बकता उधर गया, जिधर से श्रावाज श्रा रही थी। पर उसे कोई दिखाई नहीं दिया। हाँ, गालियों के जवाब में ठीक वैसी गालियाँ सुनाई देती रहीं।

सूरज को जितनी गालियाँ श्राती थीं, सब बक डालीं। उत्तर में वैसी ही सुनने को मिलीं। बकते-बकते उसका गला सूख गया।

शाम को वह भेड़-बकरियाँ लेकर वापस घर श्राया। उसका क्रोध श्रभी भी शान्त नहीं हुश्रा था। वह अपने पिता से बोला, "उस नाले में कोई छिपा हुश्रा था। उसने मुझे बहुत खिझाया। वह बराबर मेरी नकल उतारता रहा। मैंने उसको खूब गालियाँ सुनाईं। पर वह भी सारी गालियों को दोहराता रहा। मैंने उसे बहुत खोजा पर मिला नहीं। मिलता तो मैं श्राज उसे न

चखाता।"

उसके पिता ने सारी बात समझ ली। उसने सूरज को समझाते हुए कहा, "बेटा सूरज, वहाँ दूसरा कोई भी नहीं था। वह तो तेरी आवाज की गूँज थी।

जहाँ यह घटना घटी है, वहाँ सामने एकदम सीधा-सपाट खड़ा टीला है। जब कोई बोलता है तो आवाज की लहरें, उससे टकराकर वापस लौट आती हैं। इसलिए थोड़े अन्तर के साथ वही आवाज फिर सुनाई देती है।"

यह सुनकर सूरज को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला, "तो वह मेरी ध्वनि की ही प्रतिध्वनि थी क्या ?"

जोगी ने सूरज को समझाया, "इससे तुम्हें एक सीख लेनी चाहिए। जैसा बोलोगे, वैसा ही सुनोगे।"

बात सूरज की समझ में आ गई। उस दिन से उसने निश्चय किया, अब किसी को गाली नहीं दूँगा।

□ □ □

अभ्यास

बताओ : 1. सूरज कैसा लड़का था ?
2. सूरज में क्या बुराई थी ?
3. सूरज के बाँसुरी बजाने की नकल कौन कर रहा था ?
4. सूरज को क्रोध क्यों आया ?
5. सूरज के पिता ने सूरज को क्या समझाया ?
6. इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?

करो : 1. यह कहानी अपने घर वालों को सुनाओ।

समझो और लिखो : 1. संज्ञा की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। जैसे—'अकेला बेटा' में 'अकेला' शब्द विशेषण है। इस पाठ में से विशेषण शब्द छाँटकर लिखो।

6. सेवा के सौ काम

आप पुस्तकों में पढ़ते हैं या लोगों से सुनते हैं कि किसी बालक ने नदी में डूबते हुए अपने साथी को अपने प्राणों को खतरे में डालकर बचा लिया। फिर इस बहादुरी के लिए उसे पुरस्कार मिला। तब आपके मन में भी विचार आता होगा कि मैं भी अवसर आने पर जान की बाजी लगाकर दूसरों की सहायता करूँगा। शायद आप किसी बड़े अवसर की प्रतीक्षा में बैठे रहते होंगे। पर छोटे सेवा के कामों की ओर से भी लापरवाह रहना उचित नहीं है।

आप सोच रहे होंगे—हम क्या कर सकते हैं? पर सच्चाई यह है कि सेवा या सहायता के छोटे-मोटे अवसर तो प्रतिदिन आते ही रहते हैं। बस, आप उन्हें पहचानना सीखिए।

आप खेल के मैदान में हैं। वहाँ आपके किसी साथी को खेलते-खेलते चोट लग गई। आप मरहमपट्टी करके या उसे अस्पताल पहुँचाकर उसकी सहायता कर सकते हैं। कोई अन्धा व्यक्ति सड़क पार करना चाहता है, आप उसका हाथ पकड़कर सड़क पार करवा सकते हैं। और कुछ नहीं तो रास्ते में पड़े पत्थरों, काँटीली झाड़ियों, हवा से गिरी हुई बाड़ अथवा बाजार में केले के छिलकों को तो हटा ही सकते हैं। किसी रास्ता पूछने वाले को ठीक से रास्ता बताना भी तो सहायता का ही काम है। किसी की कोई चीज़ गिर जाए तो उसे उठाकर दे देना या

उसे बता देना भी तो सहायता ही है। कोई पशु खेत को चर रहा हो तो उसे खदेड़ देना भी तो सेवा है। चलते-चलते किसी का पाँव फिसल गया और वह गिर पड़ा। उसे सहारा देकर उठा देना भी तो सेवा का ही कार्य है।

आप बस में यात्रा कर रहे हैं। कोई बूढ़ा या बुढ़िया, बीमार व्यक्ति अथवा गोद में बच्चा उठाए कोई महिला बस में खड़ी है, तो बिना उसके कहे अपनी सीट उसे दे देना कितनी अच्छी बात है! बोझ लेकर चढ़ाई कर रहे किसी बूढ़े की सहायता करके देखिए, आपको कितनी प्रसन्नता मिलेगी! यह भला आदमी आपको आशीर्वाद देता हुआ न थकेगा।

आपके किसी साथी को किसी वस्तु की ज़रूरत है। उस चीज़ को खरीदने के लिए उसके पास पैसे भी नहीं हैं। उस समय पैसे देकर उसकी आवश्यकता पूरी कर देना सेवा-सहायता का कितना अच्छा अवसर है। ऐसे अवसर पर चूकना नहीं चाहिए। पर ध्यान रहे, सहायता इस तरह नहीं करनी चाहिए कि सहायता लेने वालों को लगे कि आप उसका अपमान कर रहे हैं। सहायता करके कभी जताना भी नहीं चाहिए। कोई कुत्ते के पिल्ले को सता रहा हो, या कोई चिड़िया के बच्चों को दुखी कर रहा हो तो उसे समझा-बुझाकर हटा देना भी एक अच्छा काम है। पशु-पक्षियों के भी तो जान होती है। वे हमारी तरह अपने दु:ख-सुख को कह नहीं सकते तो क्या हुआ। ऐसे निरीह जीवों की सेवा तो सच्ची सेवा है।

कई बार हम देखते हैं कि कुछ लोग राह चलते-चलते रास्ते के किनारे के पौधों, फूलों-फलों और खेती को तोड़कर यों ही हानि पहुँचाते हैं। हम ऐसे लोगों को टोककर हानि पहुँचाने से रोक भी

तो सकते हैं।

यह भी तो हो सकता है कि किसी गाँव में कोई बुढ़िया या बूढ़ा आदमी अकेला ही रह रहा है। उसे अपना सारा काम खुद ही करना पड़ता है। कभी-कभार उसे बीमारी भी घेर सकती है। तब उसके लिए कुएँ से पानी ला देना, वन से लकड़ियाँ ला देना, दुकान से सौदा या दवाई ला देना भी सेवा का काम है।

रास्ते के किनारे या तालाब-कुएँ पर पौधे लगाना और पालना देश-सेवा का काम है। आने वाले किसी खतरे के प्रति लोगों को सावधान कर देना भी तो कितना अच्छा काम है! किसी की चिट्ठी लिख देना या पढ़ देना भी एक छोटी-सी सेवा है। राह चलते किसी प्यासे को एक लोटा पानी पिला देने से वह आपको कितने आशीर्वाद देगा, ज़रा सोचिए। कहावत है, गुड़ न दे सको तो गुड़ जैसी मीठी बात तो कर ही सकते हो। मीठी बोली सुनने वाले का मन मोह लेती है। मीठा और सच बोलना बड़ा गुण है। बचपन से ही इसका अभ्यास शुरू कर देना चाहिए।

हम भारतमाता की सन्तान हैं। सेवा का प्रत्येक छोटा-छोटा काम भी मानव-प्रेम का ही अंग है। जैसे भी हो, हम दूसरों के काम आएँ। हमारी यह भावना होगी तो हम बड़े होकर देश के प्रति अपने कर्तव्यों को निभा सकेंगे।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. आप बस में बैठे होने पर क्या सहायता कर सकते हैं?
2. क्या रुपए-पैसे से भी सहायता हो सकती है?
3. क्या पशु-पक्षियों की भी सहायता की जा सकती है?
4. रास्ते में काँटे पड़े हों तो तुम क्या करोगे?

5. तुम्हारी पाठशाला में कूड़ा पड़ा हो तो तुम क्या करोगे ?

करो : 1. कोई न कोई सेवा का काम करो और कापी में लिखो ।

लिखो : 1. तुम दूसरों की क्या सहायता कर सकते हो, इसे संक्षेप में अपने शब्दों में लिखो ।

2. नीचे संज्ञा और विशेषण शब्द मिले-जुले लिखे हुए हैं, उन्हें अलग-अलग करके लिखो—

गुड़, साथी, अवसर, छोटा-मोटा, पत्थर, झाड़ियाँ, कँटीली, अवसर, अच्छा, कर्तव्य, लम्बा, सुन्दर ।

7. फूल और काँटा

हैं जनम लेते जगह में एक ही,
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उन पर चमकता चाँद भी,
एक ही सी चाँदनी है डालता॥
मेह उन पर है बरसता एक - सा,
एक-सी उन पर हवाएँ हैं बहीं।
पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
ढंग उनके एक-से होते नहीं॥
छेद कर काँटा किसी की उँगलियाँ,
फाड़ देता है किसी का वर वसन।
प्यार-डूबी तितलियों के पर कतर,
भौंर का है वेध देता श्याम तन॥
फूल लेकर तितलियों को गोद में,
भौंर को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगन्धों औ' निराले रंग से,
है सदा देता कली जी की खिला॥
है खटकता एक सब की आँख में,
दूसरा है सोहता सुर-शीश पर।
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर॥

अभ्यास

बताओ : 1. फूल और काँटा आपस में कितनी दूर रहते हैं ?
2. चाँदनी फूल पर पड़ती है या काँटे पर ?
3. वर्षा से कौन भीगता है, फूल या काँटा ?
4. तुम्हें फूल अच्छा लगता है या काँटा ? क्यों अच्छा लगता है ? बताओ ।
5. अन्त की दो पंक्तियों का भावार्थ बताओ ।

करो : 1. कविता को स्वर से गाकर पढ़ो ।

रचना : 1. इन शब्दों के अर्थ बताकर वाक्यों में प्रयोग करो :—
वर वसन, श्याम तन, अनूठा, सुर-शीश, बड़प्पन ।
2. इस कविता में 'उन पर' और 'पर कतर' दोनों जगह 'पर' शब्द आया है और दोनों जगह उसका अर्थ भिन्न-भिन्न है । आप भी दो वाक्यों में 'पर' शब्द का इस ढंग से प्रयोग करो कि दोनों अर्थ स्पष्ट हो जाएँ ।
3. आँख में खटकना, जी की कली खिलाना—इन मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करो ।

8.
एकलव्य की गुरु-दक्षिणा

आचार्य द्रोण कौरवों-पाण्डवों को धनुष-बाण चलाना सिखाते थे। उन्हीं दिनों काले रंग, घुंघराले बालों वाला एक बालक धूल से सने नंगे पैरों गुरु द्रोण के पास आया। उसके हाथ में धनुष-बाण था। उसने आचार्य द्रोण को दण्डवत् प्रणाम किया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

आचार्य ने पूछा, "तुम कौन हो और यहाँ क्यों आए हो?"

वह विनम्र होकर बोला, "आचार्य! मैं भिल्लराज का पुत्र एकलव्य हूँ। धनुष-बाण चलाना सीखने के लिए आपके पास आया हूँ।"

सभी राजकुमार उसका विचित्र वेश देखकर उसका मज़ाक उड़ाने लगें।

आचार्य द्रोण ने कहा, "तुम इस विद्या के अधिकारी नहीं हो। यह विद्या क्षत्रियों और राजपुत्रों के सीखने की है। निराश मन से वह घर लौटा। पर उसने गुरु के प्रति श्रद्धा में किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी। वह तो अपने मन में एक बार आचार्य द्रोण को गुरु मान चुका था।

उसने गुरु द्रोण की मिट्टी की मूर्ति बनाकर कुटिया में रखी। अब वह प्रतिदिन मूर्ति को प्रणाम करता, फिर धनुष-बाण उठाकर बाण चलाने का अभ्यास करता। लगातार अभ्यास करते रहने से वह अपनी कला में निपुण हो गया। इस निपुणता को वह गुरु कृपा मानता हुआ, अभ्यास करता रहता।

एक दिन आचार्य द्रोण कौरवों-पाण्डवों को साथ लेकर वन में शिकार खेलने गए। उनके साथ शिकारी कुत्ता भी था। आचार्य द्रोण राजकुमारों को खड़े होकर बाण चलाने के बारे में कुछ समझा रहे थे कि उनका शिकारी कुत्ता शिकार की टोह में एकलव्य की कुटिया के पास जा पहुँचा। एकलव्य का विचित्र वेश देखकर कुत्ता भौंकने लगा। कुत्ते के भौंकने से एकलव्य का ध्यान टूटा और अभ्यास में बाधा पड़ी।

एकलव्य ने कुत्ते के खुले हुए मुंह में सात बाण इस तरह मारे कि उसका भौंकना बन्द हो गया और कुत्ते का मुँह बिना बिंधे ही बाणों से भर गया। अब कुत्ता बाणों से भरा मुँह लेकर आचार्य द्रोण तथा राजकुमारों के पास दीन-सा जा खड़ा हुआ। अर्जुन, जो द्रोणाचार्य का सबसे होशियार शिष्य था, वह अभी तक इतनी योग्यता प्राप्त नहीं कर सका था कि कुत्ते का मुँह बिना चोट पहुँचाए बाणों से भर दे। वे सभी मिलकर उस अनोखे बाण चलाने वाले को खोजने लगे। एकलव्य को बाण-विद्या का अभ्यास करते देख बौखलाए हुए अर्जुन ने पूछा, "तुम कौन हो?"

एकलव्य ने उत्तर दिया, "मैं भिल्लराज का पुत्र और आचार्य द्रोण का शिष्य एकलव्य हूं।"

अर्जुन मन-ही-मन आचार्य पर खीझ उठा और गुरुदेव से

बोला, "आपने तो केवल हमें ही विद्या सिखाने को कहा था पर आपका यह भील शिष्य तो हम सबसे कहीं आगे है।"

आचार्य द्रोण अभी तक कुछ भी नहीं समझ पा रहे थे। उन्होंने एकलव्य को पहचान लिया। एकलव्य ने भी उन्हें दण्डवत् प्रणाम किया।

आचार्य द्रोण के कुछ कहने से पहले ही एकलव्य बोल उठा, "आचार्य ! जब आपने मुझे शिष्य स्वीकार न किया तो मैंने आपकी मूर्ति बनाकर उसी को अपना गुरु माना और अभ्यास करता रहा। यह सब आपकी ही कृपा का फल है।"

आचार्य द्रोण इस विद्या में अर्जुन से निपुण किसी को नहीं देखना चाहते थे। कुछ क्षण चुप रहकर वह एकलव्य से बोले, "यदि तुम हृदय से गुरु मानते हो तो इस विद्या के बदले तुम्हें गुरु-दक्षिणा भी देनी होगी।"

एकलव्य ने प्रसन्न होकर कहा, "आज्ञा दीजिए।"

अर्जुन की बराबरी करने वाला कोई न रहे, इसलिए द्रोणाचार्य ने कहा, "तुम अपने दाहिने हाथ का अँगूठा मुझे दे दो।"

एकलव्य ने तुरन्त एक पैना छुरा लेकर दाहिना अँगूठा काटकर गुरु के चरणों में समर्पित कर दिया।

आचार्य द्रोण ने एकलव्य को, "यशस्वी होवो," आशीर्वाद दिया। □□□

अभ्यास

बताओ : 1. एकलव्य कौन था ?

2. वह द्रोणाचार्य के पास किसलिए आया था ?

3. द्रोणाचार्य ने उसे अपना शिष्य क्यों नहीं बनाया ?

4. एकलव्य ने वापस लौटकर क्या किया ?
5. इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?

लिखो : 1. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ बताओ तथा उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो :

दण्डवत्, विनम्र, विचित्र, निराश, श्रद्धा, निपुण, अभ्यास।

2. इन शब्दों के उलटे अर्थ वाले शब्द लिखो :

काला	सफेद	आगे	......
आशा	......	प्रसन्न	......
दिन	......	दाहिना	......
पास	......	पुत्र	......
खुला	......	मूर्ख	......

3. "अभ्यास के द्वारा कठिन से कठिन काम हो सकता है," इस विषय पर दस पंक्तियाँ लिखो।

9. किन्नौर : जहाँ नाचते गाते लोग

वैसे तो सारे हिमाचल प्रदेश के लोग ही नाचने और गाने में रुचि रखते हैं किन्तु उनमें भी किन्नौर के लोग नाचने-गाने में सबसे बढ़-चढ़कर हैं।

किन्नौर हिमाचल प्रदेश के बारह ज़िलों में से एक है। वह तिब्बत की सीमा से लगा होने के कारण बड़े महत्त्व का ज़िला है। हिन्दुस्तान-तिब्बत रोड के दाएँ-बाएँ फैली किन्नौर की घाटी अत्यन्त सुन्दर है। यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर यात्री मुग्ध रह जाते हैं। यहाँ के देवदार और चीड़ के वन अपनी शीतल छाया और सरसराती मन्द पवन से यात्रियों के तन-मन को पुलकित कर देते हैं। घाटी के बीचोंबीच, सड़क के साथ-साथ सतलुज नदी बहती है। यह नदी तिब्बत से निकलकर शिपकी दर्रे के पास हिमाचल में प्रवेश करती है।

सतलुज नदी तंग गहरी घाटी में बहती है। दोनों ओर ऊँची खड़ी पहाड़ियाँ हैं। इन पहाड़ियों पर गाँव बसे हुए हैं। यह क्षेत्र अनाज की पैदावार के लिए बढ़िया नहीं है। इसके दो कारण हैं। एक तो बर्फ के कारण सर्दियों में यहाँ कुछ नहीं होता। बर्फ पिघलने के बाद और बर्फ पड़ने से पहले का समय ही खेती के लिए बचता है। किन्तु यह क्षेत्र फलों की पैदावार के लिए बहुत ही उपयुक्त है। यहाँ अंगूर और चिलगोज़े की पैदावार भी खूब होती है।

किन्नौर के लोग वीर, परिश्रमी और स्वतन्त्र स्वभाव के हैं। छल-कपट तो उन्हें छू भी नहीं गया है। वे नम्र स्वभाव के, अतिथियों का दिल खोलकर सत्कार करने वाले और ईमानदार हैं। सुन्दरता में किन्नौरी बेजोड़ हैं। इनका पहनावा भी थोड़ा भिन्न है।

किन्नौर के लोग अपने त्योहारों और खुशी के दूसरे अवसरों पर खूब नाचते-गाते हैं। क्या बच्चे और क्या बूढ़े, क्या पुरुष और महिलाएं सभी नाचने-गाने के शौकीन हैं। मिलकर गाना और मिलकर नाचना—यह इनकी विशेषता है। घंटों नाचते रहेंगे और थकने का नाम नहीं। उनके पाँवों की लयबद्ध गति और अंगों की थिरकन देखते ही बनती है।

लोग अपनी गरीबी में भी मस्ती में रहते हैं। यहाँ का जीवन श्रम का जीवन है। पहाड़ी मार्गों पर सड़कें नहीं हैं। खच्चरों और टट्टूओं की पीठ पर और आदमी की पीठ पर बोझ ढोया जाता है।

किन्नौर पुराने ज़माने से तिब्बत के साथ सम्पर्क की जगह

रही है। तिब्बत आने-जाने का मार्ग और व्यापार इसी सीमान्त के द्वारा होता था।

किन्नौर को फलों का बगीचा कह सकते हैं। यहाँ सेब, अंगूर, बादाम, अनार, खुबानी जैसे फलों की भरमार है। चिलगोज़े का तो यह घर ही है। अखरोट भी खूब होता है।

पशुओं में भेड़-बकरियों की अधिकता है। उनकी ऊन, दूध, माँस सभी कुछ इनके काम आता है। ऊन कातना-बुनना यहाँ का घरेलू धन्धा है। यहाँ हिन्दू धर्म के साथ-साथ बौद्ध धर्म का भी प्रचार है। यहाँ लामाओं के कई मठ हैं।

अब किन्नौर में कई नये विद्यालय खुले हैं। बिजली और पानी की भी व्यवस्था हो रही है। मार्गों का भी सुधार हो रहा है। कठोर परिश्रम, संतोष और सदा प्रसन्न रहना किन्नौरी लोगों के गुण हैं।

अभ्यास

बताओ : 1. किन्नौर का हिमाचल से क्या सम्बन्ध है ?
2. किन्नौर में कौन-सी नदी बहती है ?
3. किन्नौर में अनाज कम क्यों पैदा होता है ?
4. किन्नौर में कौन-कौन से फल और मेवे पैदा होते हैं ?
5. किन्नौर के लोग अपने त्यौहार किस तरह मनाते हैं ?
6. "किन्नौर को फलों का बगीचा कह सकते हैं" इसका क्या अभिप्राय है ?

करो : 1. हिमाचल प्रदेश के नक्शे में "किन्नौर" जिला ढूंढो।
2. संज्ञा और विशेषण अलग-अलग करो :

सुन्दर घाटी	वीर लोग
गहरी घाटी	नम्र स्वभाव

पढ़ो, समझो और लिखो :—

नदी	नदियाँ		
घाटी	....	सर्दी	....

10. बादल

वर्षा ऋतु में आते बादल।
काले-काले छाते बादल।
रिमझिम जल बरसाते बादल।
तन मन नयन जुड़ाते बादल।

गड़ गड़ गड़ गड़ करते बादल।
धड़ धड़ धड़ धड़ करते बादल।
हाथी जैसे लड़ते बादल।
कड़ कड़ खूब अकड़ते बादल।

हैं बिजली चमकाते बादल।
आँखें पलक झिपाते बादल।
इन्द्रधनुष छिटकाते बादल।
मन को खूब रिझाते बादल।

रिमझिम जल बरसाते बादल।
झम झम जल बरसाते बादल।
नद-नाले भर जाते बादल।
कुएँ ताल भर जाते बादल।

जहाँ चाहते जाते बादल।
नाना रूप बनाते बादल।
नभ में दौड़ लगाते बादल।
क्या ही धूम मचाते बादल।

बदल बदल ढंग आते बादल।
बदल बदल रंग आते बादल।
उजले बादल काले बादल।
हरे लाल मतवाले बादल।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. बादल किस रंग के होते हैं ?

2. बादल कब आते हैं और क्या करते हैं ?

3. बादल जब टकराते हैं तो कैसी आवाज होती है ?

4. जब बिजली चमकती है तो क्या होता है ?

5. "रिमझिम जल बरसाते" और "झम झम जल बरसाते" **दोनों** में क्या अन्तर है ?

करो : 1. इस पाठ के आधार पर वर्षा का वर्णन करो।

लिखो : 1. इन शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाएँ :
नयन, इन्द्रधनुष, नाना, नद, ताल, नभ।

2. नीचे दिए शब्दों को तालिका में ठीक जगह भरो :
उजला, काला, बादल, चाहते हैं, आँख, तन, सफेद, चमकते हैं, आते हैं।

संज्ञा	विशेषण	क्रिया

3. इस कविता में 'आश्चर्यवाचक' विराम-चिह्न का प्रयोग हुआ है।

11.
हिंसा की हार

(इस छोटे-से नाटक में कुमार सिद्धार्थ की दयालुता का परिचय बड़े सुन्दर ढंग से दिया गया है। कुमार सिद्धार्थ ही भगवान बुद्ध कहलाते हैं। एक दिन उनके चचेरे भाई देवदत्त ने हंस पर बाण छोड़ा और वह बेचारा भूमि पर आ गिरा। छटपटाते हुए हंस को कुमार सिद्धार्थ ने उठा लिया और उसके घाव पर पट्टी बाँधी। देवदत्त ने हंस को माँगा। दोनों भाइयों में झगड़ा होने लगा। उस झगड़े को मिटाने के लिये दोनों भाई राज-सभा में आए। वहाँ क्या हुआ, यह इस छोटे-से नाटक के रूप में बताया गया है।)

सिद्धार्थ—पिताजी ! प्रणाम।

देवदत्त—महाराज ! प्रणाम।

महाराज—जीते रहो ! कहो बेटा, आज राज-सभा में कैसे आए ?

सिद्धार्थ—आपस का एक झगड़ा मिटाने और उसका निर्णय कराने के लिए हम दोनों यहाँ आए हैं।

महाराज—किस बात पर झगड़ा है ?

देवदत्त—(संकेत से) इस हंस पर, जिसे राजकुमार ने अपनी बगल में दबा रखा है।

महाराज—वास्तव में यह पक्षी किसका है ?

सिद्धार्थ—उस दयालु ईश्वर का, जिसका यह सारा संसार है।

देवदत्त—नहीं, इसे मैंने बाण मारकर आकाश से भूमि पर गिराया है।

सिद्धार्थ—और मैंने इस घायल हंस को भूमि से उठाकर उसकी मरहमपट्टी और देखभाल की है।

देवदत्त—तुमने मेरे शिकार को किस अधिकार से उठाया ?

सिद्धार्थ—और तुमने इस स्वतन्त्र उड़ते हुए निरपराध पक्षी पर बाण क्यों चलाया ?

देवदत्त—शिकार करना क्षत्रिय का धर्म है।

सिद्धार्थ—क्षत्रिय का धर्म है या हत्यारे का कर्म है ? जब क्षत्रिय ही निरपराधों पर बाण चलायेगा (हंस को पुचकार कर) तो दीन-दुखियों की रक्षा करनेवाला कौन कहलायेगा ?

धर्म क्षत्रिय का बना है जीव खाने के लिये ?
या कि अपने देश को दुःख से बचाने के लिये ?

देवदत्त—तुम्हें शिकार के मेरे परिश्रम का भी ध्यान नहीं ?

सिद्धार्थ—मुझे तो है, परन्तु तुम्हें इसका ज्ञान नहीं। सोचो तो, किसी वस्तु के बनाने में परिश्रम होता है या उसके मिटाने में ?

देवदत्त—अच्छा, अब इस विषय पर और बहस करने की आवश्यकता नहीं। महाराज जैसा निर्णय करेंगे, दोनों को ही मानना पड़ेगा।

महाराज—न्यायमन्त्री जी। आपके विचार से इस पर किसका अधिकार होना चाहिए ?

न्यायमन्त्री—महाराज ! पक्षी देवदत्त के बाण ही से घायल होकर नीचे गिरा है इसलिए मेरी समझ में जिसने इस पक्षी को नीचे गिराया, अधिकार भी इस पर उसी का होना चाहिये।

महाराज—क्यों प्रधानमन्त्री जी ! आपकी क्या राय है ?

प्रधानमन्त्री—महाराज ! मैं न्यायमन्त्री जी से सहमत नहीं। जिसने घायल और मरते हुए पक्षी पर दया दिखाकर उसे जीवन-दान दिया, वह क्या उस व्यक्ति की अपेक्षा ऊँचा नहीं है, जिसने उसके प्राण लेने की चेष्टा की ?

महाराज—अवश्य है ! प्राण-घातक की अपेक्षा प्राण-रक्षक का स्थान ऊँचा है। हिंसा की अन्त में सदा हार होती है। इसलिए मेरे विचार से इस पक्षी पर सिद्धार्थ का ही अधिकार है। सिद्धार्थ, यह हंस तुम्हारा हुआ।

सिद्धार्थ—(हंस से) जा ! उड़ जा !! तू काले-काले बादलों में उड़ता हुआ और मानसरोवर की नीली लहरों में तैरता हुआ ही भला लगेगा। इसलिए जा, अपने साथियों के साथ खेल। (हंस उड़ जाता है। एक ओर सिद्धार्थ जाते हैं और दूसरी ओर देवदत्त।)

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. सिद्धार्थ और देवदत्त में क्या झगड़ा था ?
2. हंस सिद्धार्थ को क्यों दिया गया ?
3. सिद्धार्थ ने हंस को क्यों उड़ा दिया ?

करो : 1. अध्यापक जी से आज्ञा लेकर इस नाटक को खेलो।

लिखो : 1. वाक्यों में प्रयोग करो :
राजसभा, निर्णय, दयालु, निरपराध, परिश्रम।
2. इस नाटक की कहानी अपने शब्दों में लिखो।
3. प्रश्नवाचक चिह्न कहाँ लगता है और कैसा होता है ?

विशेष :—अपने अध्यापक महोदय से कहानी और नाटक का अन्तर समझो।

12. शिव और पार्वती का ब्याह

पार्वती गिरिराज हिमालय और मैना की बेटी थी। पार्वती बड़ी सुन्दर थी। जब वह बड़ी हुई तो माता-पिता को उसके विवाह की चिन्ता हुई। तभी एक दिन नारद मुनि घूमते-फिरते हिमालय के यहाँ पहुँचे। उन्होंने पार्वती को देखकर कहा, "इस कन्या का विवाह शिवजी से होगा।"

गिरिराज हिमालय जानते थे कि नारदजी की बात सच होकर रहेगी। नारद जी तो दुनिया-भर में घूमते-फिरते हैं और आगे होने वाली बातों को भी जानते हैं।

हिमालय ने कन्या के लिए वर खोजने की चिन्ता छोड़ दी।

शिवजी तो देवताओं के भी देवता हैं ! कैलास शिखर पर उनका निवास है। वे वहाँ तप कर रहे थे।

एक दिन पर्वतराज हिमालय अपनी कन्या पार्वती को साथ लेकर शिवजी के पास गये। पहले उन्होंने शिवजी की सेवा में बहुत-सी भेंट चढ़ाई और उनकी पूजा की। फिर पार्वती से कहा कि तुम भी सहेलियों के साथ जाकर शिवजी की पूजा करो।

पार्वती प्रतिदिन शिव की पूजा करने लगी। पर शिवजी तो तप में मग्न थे। उन्होंने आँख खोलकर भी नहीं देखा। वे एक वृक्ष के नीचे पत्थरों के चबूतरे पर मृगछाला बिछाकर बैठे रहे।

एक दिन जब शिवजी ने आँखें खोलीं तो पास ही पार्वती को देखा। उन्होंने सोचा कि यह स्थान अब तप करने के लिए ठीक नहीं है। यहाँ लोग आने-जाने लगे हैं। वे अपना दण्ड-कमण्डलु उठाकर वहाँ से चल दिये।

पार्वती जी शिवजी को अपनी पूजा से प्रसन्न करने आई थीं। पर वे तो उस जगह को ही छोड़कर चल दिये। पार्वती को बड़ी निराशा हुई। वे अपने घर लौट गईं। पार्वती ने मन में निश्चय किया कि मैं अपने तप और भक्ति से भगवान को प्रसन्न करूँगी। वे तप करने लगीं।

शिवजी उनकी तपस्या से प्रसन्न हुए और दोनों का विवाह होना निश्चय हो गया।

शिवजी दूल्हा बने। वे नन्दी बैल पर बैठे, सज-धजकर पार्वती से ब्याह रचाने चले। लम्बी जटाओं को बाँधा, बाघ की खाल को लपेटा, हाथ में त्रिशूल और डमरू लिया। सिर के जूड़े में, कानों में, गले में, बाँहों में सर्प लपेटे। जनेऊ की जगह भी सर्प ही लपेटा। गले में मुण्डों की माला पहनी। शरीर पर चिता की भस्म मली। इस तरह यह दूल्हा बैल पर सवार होकर ब्याहने चला।

बारात भी दूल्हे से कम विचित्र नहीं थी। दूल्हे के आस-पास शिवजी के गण चल रहे थे। बाप रे बाप! भूत, प्रेत, पिशाच सभी चल रहे थे। इन्हें देखकर मारे डर के लोग घरों में जा छिपे। बारात देखने के लिए खड़े बच्चे और स्त्रियां डर के मारे चीख पड़तीं। भीतर को भागतीं और दरवाजा बन्द कर लेतीं। इनके पीछे-पीछे सभी देवता भी चल रहे थे।

बारात जब गिरिराज के मुख्यद्वार पर पहुँची पार्वती की

माता मैना दूल्हे का श्रारती से स्वागत करने श्राई तो दूल्हे को देखकर बेहोश होकर गिर पड़ी। श्रब श्रारती श्रौर स्वागत कौन करे? मैना ने नारद को ऐसा वर बताने के लिए खूब जली-कटी बातें सुनाईं श्रौर कहा, "मैं इस दूल्हे के साथ श्रपनी बेटी का ब्याह नहीं करूँगी।"

बड़ी कठिनाई से मैना को समझा-बुझाकर मनाया गया। पार्वती जी ने तो कह दिया कि मैंने इनके लिए तप किया है तो इन्हीं से ब्याह करूँगी।

श्रन्त में शिव श्रौर पार्वती का ब्याह हो ही गया।

बाद में पार्वती जी ने स्कन्द नामक पुत्र को जन्म दिया। यह बड़ा बलवान था। यह देवताश्रों का सेनापति बना। इसी ने तारकासुर नामक दैत्य को मारा था। तारकासुर ने देवताश्रों को बहुत दुःख दिया था।

श्राज भी कन्याएँ पार्वती की पूजा करती हैं श्रौर व्रत रखती हैं।

श्रभ्यास

बताश्रो : 1. पार्वती के माता-पिता कौन थे ?
2. नारद जी ने हिमालय से क्या कहा ?
3. शिवजी का निवास स्थान कहाँ है ?
4. शिवजी की बारात कैसी थी ?

लिखो : 1. शिवजी जब दूल्हा बने तो क्या-क्या पहने हुए थे ?
2. तुम किसी बारात में गए होगे। उस बारात का वर्णन करो।
3. इस पाठ में से दस क्रियाएँ छाँटकर लिखो।
4. इन शब्दों का श्रर्थ लिखो :
वर, मग्न, निराशा, विचित्र, स्वागत।

13. पथ का गीत

काम करेंगे हम हम हम ।
नाम करेंगे हम हम हम ॥
बढ़े चलेंगे,
चढ़े चलेंगे,
हिम्मत से,
दिल मढ़े चलेंगे ।
बोलेंगे हर हर बम बम ।
काम करेंगे हम हम हम ॥
नहीं रुकेंगे,
नहीं झुकेंगे,
आये बला,
चुनौती देंगे ।
चले चलेंगे धम धम धम ।
काम करेंगे हम हम हम ॥
अड़ जायेंगे,
लड़ जायेंगे,

भिड़े मौत भ्रा
भिड़ जायेंगे ।
नहीं रुकेंगे थम थम थम ।
काम करेंगे हम हम हम ।।
वीर बनेंगे,
धीर बनेंगे,
हम बिजली के
तीर बनेंगे
चमकेंगे जग में चम चम चम ।
काम करेंगे हम हम हम ।
नाम करेंगे हम हम हम ।।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. 'पथ का गीत' इस नाम का क्या अभिप्राय है ?
2. हिम्मत से दिल मढ़े चलेंगे— इसका क्या आशय है ?
3. इन शब्दों के अर्थ बताओ :
चुनौती, वीर, धीर
4. धम-धम-धम, थम-थम-थम, चम-चम-चम—इन ध्वनियों का कविता में क्या अर्थ है ?

करो : 1. इस कविता को याद करो ।
2. इस कविता को कदम से कदम मिलाकर चलते हुए गाओ । जब 'हम हम हम' शब्द आएँ तो बांह को हवा में उछालो ।

लिखो : 1. इस पाठ में आई हुई क्रियाओं में से आठ क्रियाएँ छाँटो । उनके सामने 'काल' भी लिखो ।

14. रामायण की कहानी

बहुत पुरानी बात है। अयोध्या में राजा दशरथ राज करते थे। उनकी तीन रानियाँ थीं—कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी। राजा दशरथ के चार पुत्र हुए—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न।

राम सबसे बड़े थे। ये कौशल्या के बेटे थे। भरत कैकेयी के बेटे थे। लक्ष्मण और शत्रुघ्न सुमित्रा के बेटे थे। चारों भाइयों में बहुत प्रेम था। जब वे कुछ बड़े हुए तो उनको गुरु के आश्रम में भेजा गया। वे वहाँ रहकर शिक्षा पाने लगे। कुछ ही वर्षों में चारों भाई पढ़ना-लिखना, धनुष-बाण चलाना और हाथी-घोड़े की सवारी करना अच्छी तरह सीख गए। रामचन्द्र अपने भाइयों में सबसे अधिक निपुण थे।

एक बार ऋषि विश्वामित्र राजा दशरथ के दरबार में आए। उन्होंने राजा से कहा, "राजन! राक्षस मेरे यज्ञ में विघ्न डालते हैं। मैं चाहता हूँ कि कुछ दिनों के लिए राम और लक्ष्मण को मेरे साथ भेज दो ताकि मैं यज्ञ कर सकूँ।"

राजा दशरथ पहले तो सोच में पड़ गए। फिर उन्होंने दोनों भाइयों को विश्वामित्र जी के साथ भेज दिया।

अपने आश्रम में पहुँच कर विश्वामित्र ऋषियों के साथ यज्ञ करने लगे। कुछ राक्षसों ने विघ्न डालना चाहा। रामचन्द्र ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण के साथ उनको मार भगाया।

उधर मिथिला नगरी में सीता का स्वयंवर था। शर्त यह थी कि जो व्यक्ति वहाँ रखे शिव के धनुष को तोड़ देगा उसी के साथ सीता का विवाह होगा। विश्वामित्र जी राम-लक्ष्मण के साथ वहाँ पहुँचे। वहाँ और भी बहुत से राजा आए हुए थे। उनमें से कोई भी धनुष न उठा सका। श्रीरामचन्द्रजी बड़े शूरवीर थे। उन्होंने देखते ही देखते धनुष को उठा लिया। धनुष उठाते ही टूट गया। श्री रामचन्द्रजी का सीता जी के साथ विवाह हो गया। चारों ओर खुशियाँ मनाई गईं। वे अयोध्या में जाकर रहने लगें।

कुछ समय बाद राजा दशरथ ने श्री रामचन्द्रजी को राज-तिलक करना चाहा। इसी समय कैकेयी ने राजा से दो वर माँग लिए—एक तो रामचन्द्र के लिए चौदह बरस का वनवास और दूसरे, भरत के लिए राजतिलक।

दशरथ ऐसा नहीं चाहते थे। पर यदि राम वन में न जाते तो पिता के वचन झूठे हो जाते। इसलिए लोगों के रोकने पर भी राम वन को चले गए। सीता और लक्ष्मण भी उनके साथ गए। सारी अयोध्या में शोक छा गया। राम के वियोग में राजा दशरथ का स्वर्गवास हो गया।

भरत अपने ननिहाल से वापस आए। कैकेयी ने जब उन्हें बताया कि राम, सीता और लक्ष्मण वन को चले गए हैं। तुम अयोध्या के राजा बनोगे तो भरत को बहुत क्रोध आया। माता कैकेयी का यह काम उन्हें अच्छा नहीं लगा।

वे वन में श्रीराम के पास पहुँचे और उन्हें अयोध्या वापस लौटने के लिए कहा। पर श्रीराम नहीं माने। तब भरत श्रीराम की पादुकाएँ माँग लाए। भरत अयोध्या लौटकर पादुकाओं को

सिंहासन पर स्थापित कर राज का कार्य देखने लगे। भरत अयोध्या के बाहर नन्दी ग्राम में ही तपस्वी की तरह रहते रहे।

उधर रामचन्द्र जंगलों में भटकते रहे। बाद में एक कुटी बनाकर रहने लगे। एक दिन सीता ने वहाँ सोने का मृग देखा। रामचन्द्र उसका पीछा करते-करते दूर निकल गए। लक्ष्मण भी उनके पीछे-पीछे गए। लौटकर आने पर उन्होंने देखा कि कुटी में सीता जी नहीं थीं।

राम जंगलों में सीता को खोजते रहे। उन्हें पता चला कि लंका का राजा रावण सीता को उठा ले गया है। फिर उन्होंने हनुमान और सुग्रीव के साथ लंका पर चढ़ाई कर दी। घमासान युद्ध हुआ। रावण सेना सहित मारा गया। राम ने सीता को वापस प्राप्त किया। रावण के छोटे भाई विभीषण को लंका का राज्य मिला। अब तक चौदह बरस भी बीत गए थे। वनवास का समय पूरा हो चुका था, इसलिए श्रीरामचन्द्र विमान में बैठकर सीता और हनुमान आदि के साथ अयोध्या लौटे।

अयोध्या में खुशियाँ मनाई गईं। छोटे भाई भरत ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। सारे नगर में खुशी के साथ दिवाली मनाई गई।

इसके बाद रामचन्द्र को अयोध्या का राजा बना दिया गया। श्रीराम अपने-आप कष्ट झेल लेते थे, पर जनता को दुःखी न देख सकते थे। अब कोई दुःखी न था। रामराज्य में सभी सुख से रहने लगे। सभी रामचन्द्र को प्राणों से बढ़कर प्यार करते थे। आज भी रामराज्य को हम आदर्श के रूप में स्मरण करते हैं।

अभ्यास

बताओ : 1. राजा दशरथ की कितनी रानियाँ थीं ? उनके नाम बताओ ?
2. राजा दशरथ के कितने बेटे थे ? उनके नाम बताओ।
3. ऋषि विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को अपने आश्रम में क्यों ले गये थे ?
4. सीताजी के विवाह की शर्त क्या थी ?
5. कैकेयी ने कौन-से दो वर माँगे थे ?
6. राम ने रावण से युद्ध क्यों किया ?

लिखो : 1. रामायण की कहानी अपनी भाषा में लिखो।
2. इन शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करो :
शोक, युद्ध, स्वागत, स्वर्ण।
3. बताओ ये कौन-सी संज्ञाएँ हैं—रामचन्द्र, राजा, कौशल्या, माता, दशरथ, रानी, हाथी, नगर, अयोध्या, सीता, पत्नी, रावण।

जातिवाचक	व्यक्तिवाचक

15. पवित्र झील रेणुका

रेणुका झील हिमाचल प्रदेश की सबसे बड़ी झील है। इसका घेरा ढाई किलोमीटर है। यह झील सिरमौर जिले के रेणुका नामक स्थान में है।

इस झील का महत्व इसलिए ही नहीं है कि यह सबसे बड़ी झील है, इसका धार्मिक दृष्टि से भी बड़ा महत्व है।

भगवान परशुराम की माता का नाम रेणुका था। कहते हैं कि यहाँ पर भगवान परशुराम का जन्म हुग्रा था ग्रौर यहीं भगवान परशुराम के पिता जमदग्नि ने तप किया था। ग्रन्त में यहीं पर सहस्रबाहु ने ऋषि जमदग्नि का वध किया। यहीं रेणुका उनके साथ सती हो गई थी।

रेणुका झील पर प्रति वर्ष देव प्रबोधिनी एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक पाँच दिन मेला लगता है। कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की एकादशी देव प्रबोधिनी एकादशी होती है। यह दीपावली से ग्यारह दिन बाद ग्राती है।

कहते हैं कि माता रेणुका ने परशुराम से वचन लिया था कि वह वर्ष में एक बार ग्रवश्य माँ के पास जाकर ग्रपना मुँह दिखा जाया करे। तब से लेकर परशुराम प्रतिवर्ष माता से मिलते रहे।

देव प्रबोधिनी एकादशी के एक दिन पूर्व भक्त लोग गिरिगंगा से भगवान परशुराम की मूर्ति को चाँदी की पालकी में रखकर लाते हैं। यह पालकी जलूस के रूप में ग्राती है। जलूस के साथ नरसिंह, शहनाई, ढोल ग्रौर नगारे ग्रादि बाजे होते हैं। पालकी के साथ पुजारी चँवर डुलाते हुए चलते हैं। भक्त पालकी पर फूलों

की वर्षा करते चलते हैं और पुजारी मंत्र पढ़ते चलते हैं। 'माता रेणुका की जय', 'भगवान परशुराम की जय' के नारों से सारा क्षेत्र गूंज उठता है।

इस झील के साथ ही परशुराम ताल है। जहाँ रेणुका झील का जल परशुराम ताल में प्रवेश करता है, वहाँ जलूस रुक जाता है। पालकी रख दी जाती है। भगवान परशुराम को रेणुका के जल का स्पर्श कराते हैं। इसके बाद इस प्रतिमा को कुछ दिनों के लिए मन्दिर में स्थापित कर दिया जाता है। भक्त-जन पवित्र रेणुका झील में स्नान करके भगवान परशुराम की प्रतिमा के दर्शन करते हैं।

भगवान परशुराम की प्रतिमा का जलूस एक दिन पहले ही यहाँ पहुँच जाता है

इस मुख्य धार्मिक कार्यक्रम के साथ-साथ मनोरंजन के अन्य कार्यक्रम भी होते हैं। पहाड़ी लोकगीतों और लोकनृत्यों के कारण मेले की शोभा दुगुनी हो जाती है। कुश्तियों का कार्यक्रम भी होता है। आस-पास के पहलवान अपने-अपने शारीरिक बल और कुश्ती के दाँव-पेच का प्रदर्शन करते हैं।

यह मेला एकादशी से पूर्णिमा तक पाँच दिन लगता है। इसमें उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब आदि प्रदेशों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु यात्री आते हैं। हिमाचल के लोग तो अपनी तरह-तरह की रंग-बिरंगी वेश-भूषा में होते ही हैं।

यह स्थान प्राकृतिक सुन्दरता की दृष्टि से भी अनोखा है। रेणुका झील तीन ओर से ऊँचे पर्वतों से घिरी हुई है। जब सूर्योदय होता है तो उसका प्रतिबिम्ब इस झील में देखने योग्य

होता है ।

यह सुन्दर झील श्रद्धालु भक्तों और यात्रियों सभी के लिए दर्शनीय है ।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. 'रेणुका' झील कहाँ है ? नक्शे में देखकर बताओ ।

2. रेणुका कौन थी ? उसके पति और पुत्र का नाम बताओ ।

3. रेणुका झील पर मेला कब लगता है ?

4. रेणुका झील कितनी बड़ी है ?

5. क्या हिमाचल की किसी और झील का नाम जानते हो ?

लिखो : 1. नीचे दिए वाक्यों में देखकर बताओ कि ये किस काल की क्रियाएँ हैं :

(क) रेणुका झील एक बड़ी झील है ।

(ख) परशुराम की माता का नाम रेणुका था ।

(ग) हमें रेणुका झील का दृश्य कभी नहीं भूलेगा ।

2. बताओ ये कौन-सी संज्ञाएँ हैं ?

हिमाचल प्रदेश, परशुराम, गंगा, रेणुका झील, पंजाब प्रदेश ।

3. अपने देखे हुए किसी मेले का वर्णन लिखो ।

16. गधे की दौड़

गधा एक जंगल में रहता,
वह कुछ भी न करता काम ।
खाना पीना औ' सो जाना,
दौड़ लगाना उसका काम ।

लगा समझने वह अपने को,
दौड़ लगाने में होशियार ।
आकर बैल से बोला यों वह,
"आओ दौड़ लगाएँ, यार ।"

"मैं बूढ़ा हूँ भाग न सकता,
जाओ तुम बकरी के पास ।"
'में-में' करती बकरी बोली,
"मत रक्खो तुम मुझसे आस ।"

"मेंढक तुम पानी के राजा,
आओ मिलकर दौड़ लगाएँ ।
बूढ़े बैल और बकरी को,
आओ हम तुम अभी लजाएँ ।"

टर्र-टर्र यूँ मेंढक बोला,
"मैं छोटा तुम बहुत बड़े।
देख लगाते दौड़ हमें सब,
लोग हँसेंगे खड़े खड़े।"

"फूफा हिरन सुनो ग्राज तुम,
मेरी दौड़ कहानी।
मैंने कहा दौड़ने को तो,
मरी सभी की नानी।"

बैल बेचारा क्या दौड़ेगा?
बकरी ने भी छोड़ी ग्रास।
टर्र-टर्र मेंढक टर्राया,
"ग्रब ग्राया मैं तेरे पास।"

हँसा हिरन सुन बात गधे की,
बोला, "क्या कुछ मिले इनाम?
हार-जीत का करे फैसला,
मुझे बताग्रो उसका नाम?"

"जो जीतेगा, उसे मिलेगा,
यह ग्रनाज का बोरा।"
नाम गिलहरी उसका लेगी,
यह जीता, वह हारा।"

लगा दौड़, कर ढेंचू ढेंचू,
गधा दूर को भागा।
हिरन गिलहरी ने यह
सोचा—भाग हमारा जागा।

दोनों नें अनाज मिल खाया,
बोरी कर दी खाली।
गधा लौट कर जब आया,
तो हँसते दे दे ताली।

अभ्यास

बताओ : 1. बैल ने गधे को क्या कहा ?
2. मेंढक ने गधे को क्या उत्तर दिया ?
3. हिरन और गिलहरी नें क्या किया ?
4. गधे, बकरी और मेंढक की बोली कैसी होती है ?
5. बैल, गधा, बकरी और हिरन क्या खाते हैं ?

करो : 1. जानवरों के चित्र अपनी एलबम में लगाओ ।

लिखो : 1. इस कहानी को अपने शब्दों में लिखो ।

समझो : 1. 'आस' और 'भाग' बिगड़े हुए शब्द हैं। 'आशा' से बिगड़ कर 'आस' बन गया, और 'भाग्य' से बिगड़कर 'भाग'। ऐसी छूट कविता में ही होती है। अपने अध्यापक जी से ऐसे अन्य शब्दों के बारे में पूछो।

17. हिमाचल का वीर बालक : धर्मसिंह

धर्मसिंह एक वीर बालक है। वह तुम्हारी ही तरह एक प्राथमिक पाठशाला में पढ़ता था। वह उस समय केवल ग्यारह वर्ष का था। किन्तु उसने ऐसा साहस का काम कर दिखाया, जिसके कारण उसकी गिनती देश के होनहार वीर बालकों में होने लगी। उसका नाम और फोटो देश-भर के समाचारपत्रों में छपा। प्रधानमंत्री ने अपने निवास-स्थान पर अपने हाथ से उसकी छाती पर चाँदी का पदक लगाया।

अब तुम यह जानना चाहोगे कि धर्मसिंह ने ऐसा कौन-सा काम कर दिखाया था, जिसके कारण वह वीर बालक कहलाया।

धर्मसिंह राजकीय विद्यालय, मोरंज, जिला काँगड़ा, में पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था। उस दिन भी वह विद्यालय में पढ़ने गया हुआ था। विद्यालय में आधी छुट्टी हुई थी। कुछ बालक भोजन कर रहे थे और कुछ इधर-उधर खेल रहे थे। धर्मसिंह भी अपने साथियों के साथ विद्यालय के पास खेल रहा था।

इसी समय पास की झाड़ियों में से एक पागल भेड़िया आ निकला। उसने धर्मसिंह और उसके साथियों पर हमला कर दिया।

बहादुर धर्मसिंह घायल होने पर भी भेड़िये से नहीं डरा। उसने निश्चय किया कि वह इस दुष्ट भेड़िये का सामना करेगा। उसने अपने छोटे-छोटे दृढ़ हाथों से भेड़िये का जबड़ा पकड़ लिया।

उसके साथियों ने शोर मचाकर लोगों को सहायता के लिए पुकारा। बालकों के पुकारने पर एक किसान उनकी सहायता के लिए दौड़ा आया और उसने उस दुष्ट भेड़िये को मार डाला।

इतना बड़ा पुरस्कार प्राप्त करने वालों में हमारे प्रदेश के दीपक तथा संगीता को भला कैसे भुलाया जा सकता है। ये दोनों बर्फ के खेलों के मँजे हुए खिलाड़ी हैं। उन्होंने 11 अप्रैल, 1975 को रोहतांग के पास 'राहला' नामक स्थान से स्कीइंग शुरू की और 13 अप्रैल को लाहौल के 'कोवसार' स्थान पर पहुँच गए। बर्फ के खेलों के इतिहास में इस तरह रोहतांग को पार करने वाले इन छोटे बच्चों का प्रथम सफल प्रयास था। प्रधानमंत्री के साथ इनके भी नाम तथा फोटो देशभर के समाचारपत्रों में छपे थे।

हमारे प्रदेश के बच्चों की तरह अन्य प्रदेशों के साहसी बच्चों को भी प्रतिवर्ष पुरस्कार दिये जाते हैं। ये बच्चे दिल्ली में छब्बीस जनवरी की परेड में हाथी पर सवार होकर संसद भवन से लाल-किले तक जाते हैं। सजे-धजे हाथी पर बैठ इन बच्चों की शान देखते ही बनती है।

तुम भी सेवा तथा साहस के अनोखे काम करके इस सम्मान को प्राप्त कर सकते हो। सेवा या साहस का ऐसा अद्‌भुत काम

करने वाले बच्चे प्रतिवर्ष भारतीय बाल-कल्याण परिषद् की ओर से पुरस्कृत किए जाते हैं।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. धर्मसिंह को पुरस्कार किसलिए मिला ?

2. धर्मसिंह की उम्र कितनी थी और वह किस कक्षा में पढ़ता था ?

3. ये पुरस्कार कौन देता है ?

4. यह पुरस्कार तुम्हें किस तरह मिल सकता है ?

करो : 1. हिमाचल प्रदेश के मानचित्र में जिला काँगड़ा ढूँढो।

2. इस पाठ में से भूतकाल की आठ क्रियाएँ ढूँढो।

लिखो : 1. नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो :

साहस, होनहार, वीर, समाचारपत्र, प्रधानमन्त्री, पदक।

2. किसी आँखों-देखी या सुनी हुई वीरता की घटना का वर्णन करो।

18. अच्छा स्वास्थ्य

स्वास्थ्य ठीक है तो सब कुछ ठीक है। स्वास्थ्य ठीक नहीं तो कुछ भी ठीक नहीं। शरीर स्वस्थ हो तो पढ़ने में मन लगता है। शरीर स्वस्थ हो तभी काम और खेल में मन लगता है। अच्छे से अच्छा भोजन, सुन्दर कपड़े और सब कुछ अच्छा हो किन्तु स्वास्थ्य अच्छा न हो तो कुछ भी अच्छा नहीं लगता। न खाने को जी करता है और न पहनने को।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए शरीर, कपड़ों, घर और पास-पड़ोस का साफ-सुथरा होना जरूरी है। साथ हमारा भोजन भी शुद्ध और शक्ति देने वाला होना चाहिए। भोजन से पूरी शक्ति प्राप्त करने के लिए एक तो भोजन को खूब चबाना चाहिए। नहीं तो दाँतों का काम आँतों को करना पड़ेगा। दूसरे भोजन बहुत पेट भर कर नहीं करना चाहिए। थोड़ी-सी कमी रखकर भोजन करने से भोजन जल्दी पचता है और पेट के रोग भी नहीं होते। भोजन करने के बाद आलस्य भी नहीं घेरता। भोजन के साथ-साथ पानी की शुद्धि पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पेट के बहुत-से रोग अशुद्ध पानी के कारण होते हैं।

बासी भोजन, ज्यादा मिर्च-मसालों वाला भोजन, घी-तेल में तली हुई चीजें पेट को खराब करती हैं। भूख से अधिक भोजन सबसे ज्यादा हानि करता है।

भोजन में दालें, हरी सब्जियाँ, गेहूँ-मक्की की रोटी और

चावल अदल-बदल कर सभी कुछ खाना चाहिए। सुविधा के अनुसार फल भी जरूर खाने चाहिये पर कच्चे और सड़े-गले फ़ल कभी नहीं खाने चाहिये।

भोजन, पानी और खाने की सभी चीजों को मक्खियों से बचाना चाहिये। मक्खियाँ गंदगी पर बैठती हैं और वहाँ से उड़कर खाने-पीने की चीजों पर जा बैठती हैं। यह तो सभी जानते हैं कि मक्खियाँ भोजन पर बैठने से पहले अपने पैरों को नहीं धोतीं। गंदगी पर से रोगों के कीटाणु मक्खियों के पैरों में चिपक जाते हैं और भोजन में पहुँच जाते हैं। हैजा, पेचिश जैसे रोग ये मक्खियाँ फैलाती हैं।

मच्छर मलेरिया बुखार फैलाते हैं। ये अँधेरे और नमी वाले स्थानों में रहते हैं। गड्ढों में खड़े पानी में ये पैदा होते हैं। इस लिए कमरों में धूप और ताजी हवा आने की व्यवस्था होनी चाहिए। खिड़कियाँ और रोशनदान होने चाहिए। घरों के आस-पास गड्ढों में पानी जमा नहीं होना चाहिये। पशुओं को बाँधने की जगह भी खूब साफ-सुथरी होनी चाहिये। गोबर को घर से दूर गड्ढे में इकट्ठा करना चाहिये। घर का कूड़ा आस-पास नहीं फेंकना चाहिये।

जिस कुएँ, बावड़ी या झरने से गाँव भर के लोग पानी भरते हों, उसकी सफाई का सभी को ध्यान रखना चाहिये। उसके आस-पास किसी भी तरह की गन्दगी नहीं रहनी चाहिये।

बचपन में ही प्रतिदिन दातुन करने, नहाने और साफ-सुथरा रहने की आदत डालनी चाहिये।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए उचित आराम और नींद भी जरूरी

है। सभी जानते हैं कि रात भर की नींद के बाद जब प्रातः उठते हैं तो शरीर में चुस्ती और फुर्ती होती है। हम दिन भर के काम के लिए तैयार होते हैं। प्रातः जल्दी उठना और रात को जल्दी सोना एक अच्छी आदत है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए शरीर के साथ मन का स्वस्थ होना भी आवश्यक है। हमें सदा प्रसन्न रहना चाहिए। बात-बात पर कुढ़ने और चिढ़ने की आदत ठीक नहीं। मीठा बोलने, दूसरों के काम आने और शिष्टाचार का व्यवहार करने वाले लोग अपने आप भी प्रसन्न रहते हैं और दूसरों को भी प्रसन्न रखते हैं।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. अच्छा स्वास्थ्य के लिए किस-किस की सफाई आवश्यक है ?

2. भोजन को क्यों खूब चबाना चाहिये ?
3. कैसा भोजन नहीं खाना चाहिये ?
4. हमें क्या-क्या चीजें खानी चाहिये ?
5. मक्खियाँ रोग कैसे फैलाती हैं ?

लिखो : 1. इन शब्दों के उलटे अर्थ वाले शब्द लिखो :

बासी, सफाई, अशुद्ध, रात।

2. वाक्यों को पूरा करो :

(क) नहीं तो दाँतों का काम·········को करना पड़ेगा।
(ख) भोजन को·········से बचाना चाहिए।
(ग) हैजा, पेचिश जैसे रोग ये·········फैलाती हैं।
(घ) प्रातः·········उठना और रात को······सोना चाहिये।

19. दिवाली

दीपों का त्यौहार दिवाली दीपों का त्यौहार।
दीप जला कर जगमग कर दे घर आँगन और द्वार।
दीपों का त्यौहार दिवाली दीपों का त्यौहार।
लिपे-पुते घर चमक रहे हैं।
चाँदी से वे दमक रहे हैं।
हाट-बाट सब सजे हुए हैं।
हृदय कमल सब खिले हुए हैं।
सजे हुए हैं रंग बिरंगे घर-घर बन्दनवार।
दीपों का त्यौहार दिवाली दीपों का त्यौहार।

जगर-मगर कर दे घर आँगन ।
नाच उठे धरती का कण-कण ।
नए-नए पकवान बनाएँ ।
जी भर खायें और खिलायें ।
भाँति-भाँति के छोड़ पटाखे करें सभी से प्यार ।
दीपों का त्यौहार दिवाली दीपों का त्यौहार ।

घर घर शंख मंजीरा बजते ।
लक्ष्मी की सब पूजा करते ।
खील बताशे बाँटे जाते ।
आज भिखारी भी सुख पाते ।
सबको सुख पहुँचाने वाला मंगलमय त्यौहार ।
दीपों का त्यौहार दिवाली दीपों का त्यौहार ।

अभ्यास

बताओ : 1. दिवाली को दीपों का त्यौहार क्यों कहा है ?
2. घर और बाजार कब चमकते और सजते हैं ?
3. तरह-तरह के पकवान किस-किस त्यौहार में खाए-खिलाए जाते हैं ?
4. पटाखे, फुलझड़ियाँ किस त्यौहार पर छोड़ी जाती हैं ।
5. लक्ष्मी का पूजन किस त्यौहार में होता है ?

लिखो : 1. इनमें भाववाचक संज्ञाएँ छाँट कर कापी पर लिखो :
धरती, सुख, दीप, मित्रता, पूजा, मित्र, त्यौहार, बच्चा, बचपन, सिंचाई, थकावट ।

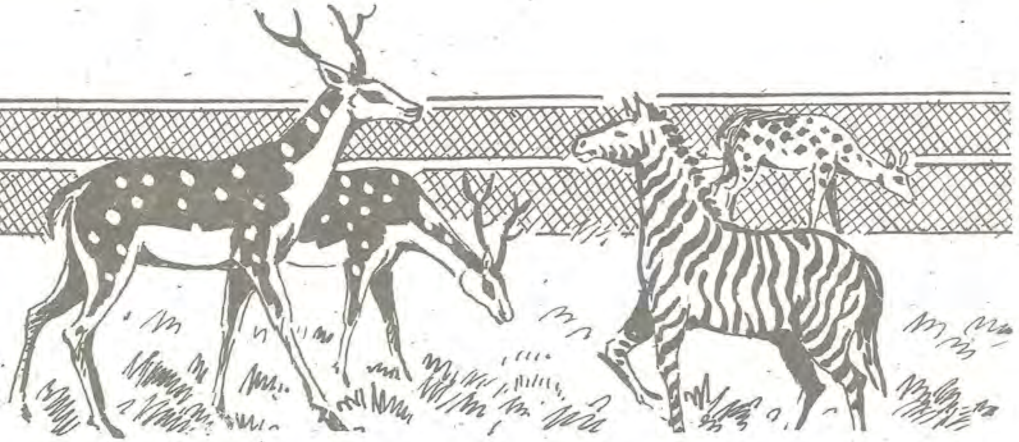

20. चिड़ियाघर की सैर

तुम कभी दिल्ली जाओ तो वहाँ का चिड़ियाघर देखना न भूलना। दिल्ली का चिड़ियाघर बहुत बड़ा है। इसमें देश-विदेश के तरह-तरह के पशु-पक्षी रखे गए हैं। इन सैकड़ों जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों को आसानी से एक ही जगह देखा जा सकता है।

नई दिल्ली के ऐतिहासिक पुराने किले की ऊँची दीवारों के साथ यह दो सौ पचास एकड़ भूमि पर फैला हुआ है। इसकी विशेषता यह है कि जंगली जानवरों के रहने के लिए जंगल जैसा वातावरण बनाया गया है। जल में रहने वाले पक्षियों के लिए झीलें बनाई गई हैं। वैसे भी चिड़ियाघर के भीतर घास के सुन्दर मैदान, रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियाँ, नकली टीले, झाड़ियाँ, पौधे और वृक्ष उसे आकर्षक बना देते हैं।

चिड़ियाघर में इतने पशु-पक्षी हैं कि यहाँ उनके नाम गिनाने को भी जगह नहीं है। हम तो बस आपको एक झाँकी भर दिखा सकते हैं।

यह छिछली झील है। इसमें तुम बगुले, सारस, बत्तखें और दूसरे जल-पक्षियों को देख सकते हो। सारस तो तुमने देखा ही

होगा । बर्फ जैसी सफेद सुन्दर बत्तखें पानी में तैरतीं और डुबकी लगातीं बड़ी सुन्दर लगती हैं । तरह-तरह के बगुले भगत चुप-चुप पानी में खड़े मिलेंगे। हाँ, उधर एक मगरमच्छ भी है और कछुए भी।

हिरनों को बाड़ वाले खुले बगीचे में रखा गया है । हिरनों में काला हिरन सबसे सुन्दर होता है । इसके सींग, बटदार सीधे और तीखे हैं, लम्बे कोई दो फुट । बारहसिंगे के सिर पर टहनियों जैसे सींग होते हैं । और भी कई तरह के हिरन हैं ।

चिपेंजी पश्चिमी अफ्रीका का जानवर है । मनुष्य से मिलते-जुलते जितने भी पशु है, उनमें चिपेंजी सबसे अधिक मनुष्य के समान है । इसकी उमर भी मनुष्य जितनी ही होती है । सरकस में चिपेंजी को मेज-कुर्सी पर बैठकर खाना खाते, चाय पीते और सिगरेट पीते देखा जा सकता है । चिपेंजी को कपड़े पहनना अच्छा लगता है । जंगलों में भी चिपेंजी पेड़ों पर कम और धरती पर अधिक रहता है । इसके हाथ-पैर बड़े-बड़े और मजबूत होते हैं ।

हाथी अपने भारी भरकम शरीर, थम जैसी टाँगों, लम्बी सूँड और बाहर निकले दो लम्बे सफेद दाँतों के कारण सबको अपनी ओर आकर्षित करता है । यह बहुत समझदार होता है । हाथी अपनी सूँड से नाक और हाथ दोनों का काम लेता है । इसे नदी में नहाना बहुत पसन्द है किन्तु नहाने के बाद यह अपने शरीर पर सूँड से धूल फेंक लेता है । हाथी सूँड में पानी भर कर उसे पिचकारी की तरह फेंकता है । हाथी पर बैठकर राजा युद्ध किया करते थे । बर्मा में हाथी लकड़ी के बड़े लट्ठों को ढोने का काम भी करते हैं । दिल्ली में 26 जनवरी को, गणतन्त्र दिवस के जलूस में सजा हुआ हाथी भी रहता है । चिड़ियाघर में अलग से टिकट लेकर

बच्चे, बड़े हाथी की सवारी भी कर सकते हैं।

यह जिराफ है ! बाप रे ! इतना ऊँचा और इतनी लम्बी गर्दन कि वृक्षों की चोटियों तक पहुँच जाए। यह कोई 16 फुट ऊँचा होता है। यह अपनी लम्बी जीभ से टहनियों और पत्तियों को अपने मुँह में खींच लेता है। यह ऊँचा होने से दूर तक देख सकता है। इसके सूँघने की शक्ति भी बड़ी तेज होती है।

कंगारू आस्ट्रेलिया का रहने वाला है। यह भी हमारा मेहमान है। इसकी पिछली टाँगें बहुत लम्बी और अगली छोटी। यह खूब लम्बी छलाँग लगाता है। कंगारू माँ अपने छोटे बच्चों को, पेट के नीचे लगी थैली में उठाए रहती है। थैली छोड़ने के बाद भी जब वे माँ के साथ चर रहे होते हैं और उन्हें डर दिखता है तो थैली में आकर छिप जाते हैं।

विदेशी पक्षियों में शुतुरमुर्ग बड़ा विचित्र है। यह है तो पक्षी, पर उड़ना नहीं जानता। यह संसार के पक्षियों में सबसे बड़ा है। यह आठ फुट के लगभग ऊँचा होता है। इसकी टाँगें और गर्दन खूब लम्बी होती हैं। यह तेजी से दौड़ लेता है। यह भी हमारे देश में नहीं होता। यह अफ्रीका से आया है।

अब आपकी भेंट भारी भरकम जानवर गैंडे से करवाते हैं। इसकी थूथन पर सींग-सा होता है। इसकी खाल बड़ी मोटी और सख्त होती है। उस पर बन्दूक की गोली भी कम असर करती है। कंधों के आगे-पीछे और रानों के आगे चमड़ी की भारी झालरें-सी होने के कारण यह सुरक्षित रहता है। यह दैत्य जैसा बड़ा भयानक दिखता है।

जेबरा आकार में तो गधे जैसा होता है परन्तु सफेद-काली

धारियों के कारण बड़ा विचित्र लगता है। यह भी अफ्रीका का वासी है। यह झुंडों में रहता है। जब ये चर रहे होते हैं तो उनमें से एक पहरा देता रहता है। गधे की तरह यह भी जोर की दुलत्ती मारता है।

अब तेन्दुए, बाघ और बबर शेर से मिल लीजिए। तेन्दुआ बिल्ली के परिवार का ही जानवर है। यह कुत्तों, बन्दरों और बकरियों को मार कर खाता है। यह वृक्षों पर भी चढ़ जाता है। यह बड़ा चालाक जानवर है। घने जंगल में रहना पसन्द करता है। इसके भूरे पीले रंग पर काले धब्बे होते हैं।

बाघ को पानी में नहाना पसन्द है। बाघों की संख्या भी अब बहुत कम रह गई है। इन्हें मारना कानूनी अपराध है। यह शक्ति में बबर शेर से कम नहीं है। बबर शेर जंगल का राजा है। यह इतना शक्तिशाली होता है कि पंजे की एक ही चोट से भैंसे को गिरा सकता है। शेर गर्जता भी खूब है। शेर की दहाड़ से जंगल के सारे पशु भयभीत हो जाते हैं।

भाँति-भाँति के इन पशु-पक्षियों को, चिड़ियाघर में उनकी रुचि का भोजन दिया जाता है। शेर, चीते, बाघ आदि माँस आदि खाते हैं। बगुला, सारस आदि मछली खाते हैं। मगरमच्छ, साँप आदि अंडे खाते हैं। हाथी को गन्ना पसन्द है तो बन्दरों को केला। चिड़ियों को दाना-दुनका चाहिए तो हिरनों को हरी घास। चिड़ियाघर में उनके इलाज के लिए डाक्टर भी हैं।

चिड़ियाघर देखने जाओ तो जानवरों को कुछ भी खाने को न देना। इससे वे बीमार हो जाते हैं। जानवरों के बाड़ों में हाथ नहीं डालना चाहिए। उनसे सटकर खड़ा होना भी ठीक नहीं।

अभ्यास

बताओ : 1. 'चिड़ियाघर' से 'क्या समझते हो ?
2. नक्शे में देखकर बताओ कि दिल्ली कहाँ है ?
3. छिछले पानी में रहने वाले पक्षियों के नाम बताओ।
4. तुमने जितने जंगली जानवर देखे हों, उनके नाम बताओ।
5. तीन विदेशी जानवरों और पक्षियों के नाम बताओ।

करो : 1. पशु-पक्षियों के फोटो इकट्ठे करो और कापी में चिपकाओ। यह तुम्हारा चित्रों से बना चिड़ियाघर होगा। चित्रों में आए पशु-पक्षियों के नामों की अलग-अलग सूची बनाओ।

लिखो : 1. चिंपैंजी के बारे में तीन-चार वाक्य लिखो।
2. जिस संज्ञा से किसी वस्तु के गुण, दोष या काम का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—बचपन, बुढ़ापा, दहाड़ आदि। स्मरण रखो, भाववाचक संज्ञाओं का आकार नहीं होता। अध्यापक से इस संज्ञा के बारे में समझो।

21. सुन्दर शाल : हिमाचल के

आज मशीनों का युग है। सब काम मशीनों से होता है। जब मशीनें नहीं थीं तब हस्तकला का विशेष महत्व था। जीवनोपयोगी सभी वस्तुओं का निर्माण कारीगरों द्वारा किया जाता था। यह बात ठीक है कि मशीनों द्वारा सुन्दर से सुन्दर वस्तुएँ कम लागत से तैयार हो जाती हैं। परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि मशीनें भी आदमी के द्वारा ही बनाई जाती हैं। मनुष्य इस धरती पर भगवान की सर्वश्रेष्ठ रचना है। मनुष्य को दूसरे प्राणियों से ऊँचा उठाने में उसकी बुद्धि हाथों का ही कमाल है। मनुष्य जैसे हाथ दूसरे किसी प्राणी के पास नहीं हैं।

युग बदल रहा है। अब फिर हस्तशिल्प का महत्व बढ़ गया है। मशीन की बनाई सस्ती चीज की तुलना में लोग हाथ की बनी महंगी चीज खरीदना पसन्द करते हैं। हमारा प्रदेश पहाड़ी प्रदेश है। यहाँ मैदानों जैसे यातायात के साधनों और उद्योग-धन्धों का विकास नहीं हो सकता। यहाँ के लिए तो घरेलू उद्योग और छोटे उद्योग ही उपयोगी हो सकते हैं। हिमाचल कृषि प्रधान देश है। वनसम्पदा की दृष्टि से भी हिमाचल पूर्णतः समृद्ध है। यहाँ के देवदार, कैल और चीड़ के वन बड़े मूल्यवान हैं। फलों—विशेष रूप से सेब की उपज के लिए तो यह देश का अग्रणी पहाड़ी राज्य है। यही कारण है कि हिमाचल प्रदेश को 'सेबों का प्रदेश' कहा जाने लगा है।

यहाँ लोग भेड़-बकरियाँ पालते हैं, इसलिए ऊन खूब होती है। ठण्डी जलवायु होने से यहाँ ऊनी वस्त्रों की जरूरत भी ज्यादा होती है। यही कारण है कि ऊन कातना और ऊनी वस्त्र बुनना यहाँ का प्रमुख घरेलू उद्योग बन गया है।

ऊनी वस्त्रों में भी हिमाचली शाल अपनी परम्परागत रंग-बिरंगी चौकोर, तिकोनी आदि बनावट के लिए देश-विदेश में खूब लोकप्रिय हुए हैं। पशमीने के महंगे शालों का तो कहना ही क्या है। इनके अतिरिक्त गुदमे, पट्टू और नमदे भी यहाँ बहुत सुन्दर बनते हैं।

कारीगरों की अनेक सहकारी समितियाँ अब इस काम को संगठित और व्यवस्थित रूप से कर रही हैं। अब कारीगरों को भरपूर काम मिल जाता है और उन्हें तैयार माल बेचने की चिन्ता नहीं करनी पड़ती। उनको कच्चा सामान भी उपलब्ध कराया जाता है। नई-नई बनावटों से भी उनका परिचय कराया जाता है। इस तरह घरेलू उद्योग बड़ी उन्नति कर रहा है। इससे अनेक परिवारों को रोज़गार मिल रहा है। इस काम में महिलाएँ भी पूरा सहयोग कर सकती हैं।

हिमाचल के ऊँचाई वाले क्षेत्रों में एक विशेष प्रकार की भेड़ होती है जिसके लम्बे बालों के नीचे छोटे नरम रोएँ होते हैं। यही पशमीना है। इसकी विशेषता यह है कि इसके रोएँ महीन और मुलायम होने के कारण बारीक काता जा सकता है। इससे बनी शालें हल्की, टिकाऊ और अधिक गर्म होती हैं। धनी वर्ग की महिलाएँ पशमीना शाल ओढ़ना पसन्द करती हैं। सच तो यह है कि कुल्लू-शाल अपने चटख रंग की हल्की बनावट के कारण

बहुत ही पसन्द किए जाते हैं। अब वे कशमीरी शालों से किसी बात में भी पीछे नहीं हैं।

हमारे देश की अस्सी प्रतिशत जनता गाँवों में बसती है। गाँवों में घरेलू उद्योगों को बढ़ावा देकर ही यह देश सुखी और समृद्ध हो सकता है।

□□□

अभ्यास

बताओ : 1. "आज मशीनों का युग है।" इसका क्या अभिप्राय है ?
2. जब मशीनें नहीं थीं, तब काम कैसे होता था ?
3. हमारे प्रदेश में बड़े उद्योगों की स्थापना क्यों नहीं हो सकती ?
4. हमारे प्रदेश की मुख्य चीजें क्या-क्या हैं ?
5. 'सहकारी समिति' क्या होती है ?

लिखो : 1. संज्ञा और विशेषण छाँटकर नीचे दी हुई तालिका में लिखो :
ऊनी, सामान, अनेक, हिमाचल, वस्तु, कच्चा, माल, ऊन, कृषि, महँगी, उद्योग।

विशेषण	संज्ञा

22. गौरव गान

अगर आगरे तुम जाओ
देखो जाकर ताजमहल,
तो न भूलना उधर देखना
मथुरा, गोकुल, वृन्दावन।

दिल्ली जाओ तो जरूर
देखो मीनार कुतुब चढ़कर,
जा प्रयाग में भी देखो
सुन्दर अशोक की लाट सुघर।

उदयपुर चित्तौड़ कभी
जाओ तो देखो यह माटी,
तीर्थ-भूमि से भी पवित्र
जो वीरों की हल्दी घाटी।

पानीपत जाना हो तो
तुम कुरुक्षेत्र भूलना नहीं,
भीम-युधिष्ठिर, अर्जुन के
हैं तीर यहीं पर गड़े कहीं।

काशी जाओ तो देखो तुम
सारनाथ के भी खँडहर,
बुद्धदेव के मठ-विहार
हैं बने जहाँ सुन्दर-सुन्दर।

जाओ यदि बम्बई, अजन्ता
की तो चित्रकला देखो,
जा समुद्र के पार एलोरा
की शुचि शिल्प कला देखो।

जहाँ-जहाँ अपने वैभव की
याद देखने जाओगे,
अपनी आर्य-जाति का गौरव
कम न किसी से पाओगे।

कठिन शब्दों के अर्थ

1. प्रार्थना

लोट रहा—लोट-पोट हो रहा।
मुकुट—सिर पर लगने वाला सजावटी ताज।
जन्मभूमि—जिस भूमि पर जन्म हुआ हो।

2. कोलतार का पुतला

पुतला—लकड़ी के ढाँचे पर कपड़े पहनाकर बनाया हुआ, आदमी जैसा।
कोलतार—एक काला और बदसूरत गाढ़ा पदार्थ, जो पक्की सड़क बनाने के काम आता है।
बाड़—खेत के चारों ओर काँटेदार झाड़ियाँ लगाकर बनाई हुई रोक।
चपत—चपेड़, गाल पर पंजा मारने का नाम।
प्रतिज्ञा—वायदा।

3. क्या कौए गिन सकते हैं ?

चालाक—चतुर, होशियार।
चालाकी—चतुराई, होशियारी, अपना काम बनाने की समझ।
रोचक घटना—अच्छी लगने वाली बात।
शिकारी—जंगल के पशु-पक्षियों को मारने वाला।
निशाना सीधा करना—निशाना लगाने का अभ्यास करना।
प्रयोग—पूर्व निश्चित विधि के अनुसार किया गया कार्य।
परिणाम—नतीजा, काम का फल।

4. सड़क से सीख

तन—शरीर।
निराले—अनोखे, विचित्र।

नर-नारी—स्त्री-पुरुष।
महाराजे—बहुत बड़े राजे।
आदर—इज्जत, सम्मान, सत्कार।
दब्बू—दब जाने वाला, डर जाने वाला।
भेद—पते की बात, गुप्त बात।

5. जैसा कहोगे, वैसा सुनोगे

धौलाधार—बर्फ से ढकी एक धार का नाम, जो चम्बा और काँगड़ा जिलों में फैली हुई है।
तराई—पहाड़ से नीचे की जगह।
गद्दी—भेड़-बकरियाँ पालने वाली एक जनजाति।
ज़िद्दी—जिद करने वाला, हठी।
विचार—ख्याल।
सुधरना—ठीक होना।
क्रोध—गुस्सा।
शान्त होना—समाप्त होना।
खिझाना—गुस्सा दिलाना।
अन्तर—फर्क।
आश्चर्य—हैरानी।
ध्वनि—आवाज।
प्रतिध्वनि—आवाज की दोबारा हुई आवाज।

6. सेवा के सौ काम

पुरस्कार—इनाम, अच्छा काम करने के लिए मिलने वाली चीज।
अवसर—मौका।
प्रतीक्षा—इन्तजार।
लापरवाह—परवाह न करने वाला।
प्रतिदिन—हर रोज, रोज-रोज।
मरहमपट्टी—घाव पर लगाने वाली दवा और उसके ऊपर बाँधा कपड़ा।

खदेड़ना—भगाना।
आशीर्वाद—आशीश।
चूकना—टलना, रुकना।
अपमान—बेइज्जती।
जताना—कहकर बताना, याद करना।
निरीह—बेजबान, विवश।
हानि—नुकसान।
सावधान—चौकन्ना।
बोली—जबान।
गुण—खूबी।
अभ्यास—किसी काम को बार-बार करना।
संतान—पुत्र-पुत्रियाँ।
प्रत्येक—हर एक।
मानव प्रेम—मनुष्य मात्र से प्रेम।
भावना—मन का भाव-विचार।
अंग—हिस्सा, भाग।
कर्तव्य—करने योग्य कार्य।
निभाना—पूरा करना।

7. फूल और काँटा

मेह—वर्षा।
वर वसन—अच्छा कीमती कपड़ा।
वेध—छेद।
श्याम—काला।
अनूठा—अनोखा, विचित्र, निराला।
निज—अपनी।
सुर-शीश—देवता का सिर।
कुल—खानदान।
बड़प्पन—बड़ा होने का भाव।
कसर—कमी।

8. एकलव्य की गुरु-दक्षिणा

आचार्य—किसी विद्या को पूरी तरह जाननेवाला।
दण्डवत् प्रणाम—लम्बा लेटकर किया गया प्रणाम।
विनम्र—बहुत नम्र, विनय सहित।
भिल्लराज—भीलों का राजा।
विचित्र वेश—अनोखा पहनावा।
अधिकारी—पात्र, योग्य व्यक्ति।
क्षत्रिय—ठाकुर, राजपूत, खत्री।
निराश—जिसकी आशा पूरी न हुई हो।
कुटिया—छोटी झोंपड़ी।
कला—विद्या।
गुरु कृपा—गुरु की कृपा।
शिष्य—चेला।
योग्यता—होशियारी, निपुणता।
बौखलाना—क्रोध में झुँझलाना।
निपुण—चतुर, होशियार।
गुरु-दक्षिणा—विद्या सीखने के बदले गुरु को दी जाने वाली वस्तु।

9. किन्नौरी-जीवन

रुचि—शौक।
सीमा—हद।
महत्व—विशेष ध्यान देने योग्य।
प्राकृतिक सौन्दर्य—प्रकृति की सुन्दरता।
यात्री—यात्रा करने वाले, सैर-सपाटे करने वाले।
मुग्ध—प्रसन्नतापूर्वक गद्गद् हो जाना।
शीतल छाया—ठण्डी छाँव।
सरसराती मन्द पवन—ऐसी धीरे बहने वाली हवा, जो पत्तों से टकराकर सरसर आवाज पैदा करती है।

तन-मन—शरीर और मन।
पुलकित—प्रसन्नता से गद्गद्, रोमांचित।
प्रवेश करना—दाखिल होना, घुसना।
परिश्रमी—मेहनती।
स्वतन्त्र—आजाद।
अतिथियों—मेहमानों।
लय बद्ध—गीत के बोलों और बाजों की आवाज के अनुसार, एक जैसी चाल।
अंगों की थिरकन—अंगों को एक जैसी मटकाने की क्रिया।
मस्ती—खुशी, आनन्द, मौज।
सम्पर्क—मेल-जोल।
व्यापार—सामान खरीदना और बेचना।
सीमान्त—आखिरी सीमा।
घरेलू धन्धा—घर में किया जाने वाला काम।
लामाओं—पुरोहितों, धर्म-गुरुओं, तिब्बती धर्म-गुरु।
मठ— आश्रम, भिक्षुओं के रहने की जगह।

10. बादल

तन-मन-नयन—शरीर, मन और आँखें।
जुड़ाना—अच्छा लगना।
झिपाना—झपकना, आँखें बन्द करना और खोलना।
इन्द्रधनुष—बादल होने पर सूर्य की किरणों से आकाश में बनने वाला रंग-बिरंगा आधा गोल धनुष जैसा।
रिझाना—प्रसन्न करना।
नाना रूप—तरह-तरह की शक्लें।
नभ—आकाश।

11. हिंसा की हार

दयालुता—दया का भाव।
परिचय—पहचान।
घाव—जख्म।

राजसभा—राजा का दरबार।
निर्णय—फैसला।
संकेत से—इशारे से।
वास्तव में—असल में।
अधिकार—हक।
निरपराध—जिसने कोई अपराध न किया हो।
शिकार करना—जंगल के पशु-पक्षियों को मारना।
हत्यारे—हत्या करने वाले।
ज्ञान—समझ।
विषय—बात
निर्णय—फैसला।
न्यायमंत्री—न्याय (फैसला) करने वाला मंत्री।
प्रधानमंत्री—सबसे बड़ा मंत्री।
सहमत—एकमत, वैसी ही राय वाला।
जीवन-दान देना—मरते को बचाना।
चेष्टा—कोशिश, प्रयत्न।
प्राण-घातक—जान लेने वाला।
प्राण-रक्षक—जान बचाने वाला।
हिंसा—पीड़ा, सताने का भाव।
मानसरोवर—हिमालय का एक सरोवर।

12. शिव और पार्वती का ब्याह

गिरिराज—पर्वतों का राजा।
वर—दूल्हा, पति।
कैलास-शिखर—कैलास पर्वत की चोटी।
निवास—रहने की जगह।
तप—ध्यान, जाप, उपासना, साधना।
पर्वतराज—पर्वतों का राजा।
मृगछाला—मृग की खाल।
दण्ड-कमण्डलु—डण्डा और भिक्षा माँगने का पात्र।

भक्ति—भजन-पूजन।
जटा—लम्बे बालों के जुड़ जाने से बनी हुई रस्सी जैसी।
त्रिशूल—तीन तीखी नोकों वाला शस्त्र।
डमरू—खाल से मढ़ा हुआ एक बाजा।
चिता—जिसमें मुर्दा जलाया जाता है।
गण—सहायक, नौकर-चाकर।
मुख्य द्वार—बड़ा दरवाजा।
स्वागत—किसी के आने पर किया जाने वाला स्वागत-सत्कार।
बेहोश—अचेत, मूर्छित।
स्कन्द—शिव-पार्वती के पुत्र का नाम।
सेनापति—सेना का स्वामी।
दैत्य—देवता का शत्रु, राक्षस।

13. पथ का गीत

नाम करेंगे—यश फैलाएंगे।
हर-हर, बम-बम—वीरता का काम करते समय बोले जाने वाले शब्द।
चुनौती देना—ललकारना।
धीर—धीरज वाले।

14. रामायण की कहानी

आश्रम—ऋषियों-मुनियों के रहने का स्थान।
शिक्षा—सीख, विद्या।
राक्षस—काले, डरावने और निर्दयी लोग।
यज्ञ—अग्नि में मंत्र पढ़कर डालने का काम।
विघ्न—रुकावट।
शूरवीर—बहादुर।
स्वयंवर—जिसमें लड़की अपने आप वर का चुनाव करे।
राजतिलक—राजा बनाने के लिए माथे पर लगाया जाने वाला टीका।
वर—वरदान।
वनवास—वन में वास।

शोक—उदासी, गम ।
वियोग—जुदाई ।
स्वर्गवास—मृत्यु, मौत ।
कुटी—पत्तों और घास से बनाई हुई झोंपड़ी ।
मृग—हिरन ।
घमासान युद्ध—बड़ी लड़ाई ।
विमान—हवाई जहाज ।
दिवाली—रात को दीप जलाकर खुशी मनाना ।
जनता—प्रजा ।
रामराज्य—श्रीराम का राज्य, अच्छा राज्य ।
आदर्श—लक्ष्य, जिसकी तरह बनना चाहें ।
स्मरण—याद ।

15. पवित्र झील रेणुका

धार्मिक दृष्टि—धर्म की नजर से ।
वध करना—मारना ।
देव प्रबोधिनी एकादशी—कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी ।
पूर्णिमा—जिस रात को चन्द्रमा पूरा गोल होता है, वह तिथि ।
चँवर—चौरी ।
क्षेत्र—इलाका ।
स्पर्श करना—छूना ।
प्रतिमा—मूर्ति ।
स्थापित करना—बिठाना, प्रतिष्ठित करना, रखना ।
भक्त-जन—भक्त लोग ।
मनोरंजन—मन बहलाव ।
कार्यक्रम—काम ।
कुश्तियां—मल्ल-युद्ध, पहलवानों के मुकाबले ।
शारीरिक—शरीर का ।
प्रदर्शन—दिखावा ।
वेश-भूषा—गहने-कपड़े ।

सूर्योदय—सूर्य का निकास।
प्रतिबिम्ब—अक्स, तस्वीर, छवि।

16. गधे की दौड़

आस—आशा।
ताली देकर— दोनों हाथों को बजाकर।

17. हिमाचल का वीर बालक : धर्मसिंह

वीर बालक—बहादुर लड़का।
होनहार—भविष्य में बड़े बनने वाले।
समाचारपत्रों—अखबारों।
प्रधानमंत्री—देश की केन्द्रीय सरकार का सबसे बड़ा मंत्री।
निवास स्थान—रहने की जगह।
हमला—आक्रमण, धावा।
पुरस्कार—इनाम।
इतिहास—अब तक घटी घटनाओं या उनसे सम्बन्ध रखने वाले लोगों का क्रम के अनुसार वर्णन।
प्रयास—मेहनत।
अन्य—दूसरे।
साहसी—हिम्मत वाले।
परेड—ऐसा जलुस जिसमें फौजें भाग लें।

18. अच्छा स्वास्थ्य

स्वास्थ्य—शरीर के ठीक-ठाक होने का भाव।
शुद्ध—जिसमें कोई अशुद्ध वस्तु न हो।
शक्ति—ताकत, बल।
बासी—पिछले दिन का बचा हुआ।
हानि—नुकसान।
सुविधा—आसानी।
कीटाणु—रोग फैलाने वाले बहुत छोटे कीड़े।

हैजा—वह रोग जिसमें बार-बार उल्टियाँ और दस्त आते हैं।
पेचिश—मरोड़ के साथ दस्त आने का रोग।
मलेरिया—मच्छर के काटने से होने वाला रोग, जिसमें ठण्ड लगकर बुखार आता है।
शिष्टाचार—अच्छे लोगों का चाल-चलन।

19. दिवाली

हाट-बाट—बाजार और रास्ते।
बन्दनवार—आम और पीपल आदि के पत्तों की झालरें।
खील-बताशे—भूनने से फूले हुए धान को खील कहते हैं। बताशे-चीनी से बनी गोल-गोल चीजें।
मंगलमय—भलाई करने वाला।

20. चिड़ियाघर की सैर

चिड़ियाघर—वह स्थान जहाँ देश-विदेश के जंगली पशु-पक्षी रखे गए हों।
देश-विदेश—अपना देश और दूसरे देश।
विचित्र—अनोखे।
ऐतिहासिक—इतिहास से सम्बन्धित।
वातावरण—आसपास की भूमि, पेड़-पौधे, जलाशय आदि।
आकर्षक—लुभावना
छिछली—जो गहरी न हो।
चिंपेंजी—वनमानुष।
सूँड—हाथी की जमीन तक झूलती नाक जैसी।
आकर्षित करना—खींचना।
दैत्य जैसा—भारी-भरकम, मोटा-ताजा।
दुलत्ती मारना—पिछली दोनों टाँगों को एक साथ उठाकर जोर से मारना।
कानूनी अपराध—कानून के अनुसार दण्ड देने योग्य अपराध।
भयभीत होना—डर के मारे घबराना।

21. सुन्दर शाल : हिमाचल के

हस्तकला—हाथ की कारीगरी।
जीवनोपयोगी—जीवन के लिए उपयोगी।
निर्माण करना—रचना करना, बनाना।
लागत—खर्च।
सर्वश्रेष्ठ—सबसे बढ़िया।
हस्तशिल्प—दस्तकारी, हाथ की कारीगरी।
यातायात के साधन—आने जाने के साधन।
उद्योग-धन्धों—बड़ी-बड़ी मशीनों से वस्तुओं का निर्माण तथा घरेलू धन्धे करने वाले संस्थान।
विकास—फैलाव।
कृषि-प्रधान—वह जिसमें खेती-बाड़ी का काम प्रमुख हो।
वनसम्पदा—वनों से मिलने वाली चीजें।
समृद्ध—भरपूर।
अग्रणी—अगुआ, सबसे आगे रहने वाला।
परम्परागत—पुरखों के समय से चली आ रही।
ज्यामितिक—ज्यामिति के अनुसार।
लोकप्रिय—लोगों को प्यारा लगने वाला।
सहकारी समितियाँ—कई लोगों के सहयोग से बनी हुई संस्थाएँ।
संगठित रूप से—संगठन के साथ।
व्यवस्थित रूप से—व्यवस्था के साथ।

22. गौरव गान

ताजमहल—आगरे में स्थित एक भव्य और सुन्दर इमारत।
तीर्थभूमि—वह पवित्र स्थान जहाँ रहना, स्नान-ध्यान, ज्ञान आदि करना अच्छा समझा जाता हो।
खण्डहर—महलों के टूटे-फूटे बचे हुए भाग।